शब्द रंजन

वर्ष 1 | अंक 10 | उदयपुर बुधवार 1 जून 2016 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

हल्दीघाटी युद्ध प्रताप का प्रण-युद्ध था

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

एक तरफ सत्ता का सिंहासन, अधिकार सुख की मादकता, ऐश्वर्य, समृद्धि और सम्पन्नता का गौरव गुमान और दूसरी ओर अभाव, भटकाव, संघर्ष, जूझ, पराजय के भाव; लेकिन मानवीय मूल्यों का छलकता भंडार। जो मूल्यों के लिए, मानवता के लिए, आजादी के लिए अपना उत्सर्ग करता है वही अमर रहता है। वही प्रताप कहलाता है। ऐसे ही मूल्यों के रक्षक राणा प्रताप और उनके साथी आदिवासी थे जिनकी रग-रग में स्वतंत्रता के, स्वाधीनता के, शौर्य के, सत्व के, गौरव के, देशप्रेम के भावों का पूंजीभूत पौरूष भरा हुआ था।

मेवाड़ भू-भाग आदिवासी बहुल भू-भाग है। यहां के राणाओं ने जितने भी युद्ध किये, आदिवासियों ने उनका सर्वाधिक साथ दिया। आदिवासियों में स्वाभिमान, देशप्रेम, समर्पण, मैत्रीभाव, ईमानदारी तथा वफादारी जैसे गुण कूट-कूट कर भरे पड़े हैं। मेवाड़ के राजचिन्ह में भी एक ओर राजपूत वीर तथा दूसरी ओर आदिवासी वीर दिखाया गया है।

आदिवासियों के साथ रहने से महाराणा प्रताप मंत्र, तंत्र, मूठ, भूत, प्रेत, डायन, चूड़ैल, सिकोतरा, सिकोतरी, सिंयारा, सिंयारी आदि अतीन्द्रिय शक्तियों के प्रभाव और प्रयोग से परिचित थे। युद्ध में आदिवासियों की अधिकता होने से इन मारक विद्याओं का प्रयोग होना भी कोई अनहोनी बात नहीं थी।

प्रताप के साथ इन शक्तियों की बड़ी मदद रही। वीर भंवरे और जोगण्या मधुमक्खियां बन दुश्मनों पर बुरी तरह टूट पड़तीं। इनके जहरीले डंक तीर और गोलियों से भी अधिक असरकारी होते। प्रताप पर सिकोतरी बड़ी मेहरबान रही। अदृश्य शक्ति के रूप में वह प्रताप के भाले की नोक पर अपना प्रभाव दिये रहती। इससे स्पष्ट है कि यहां जितने भी युद्ध लड़े गये, अदृश्य शक्तियों ने सदैव युद्धवीरों का साथ दिया।

इन्हीं आदिवासियों के भरोसे अकेला महाराणा प्रताप ही ऐसा था जिसने अकबर को लोहे के चने तक चबवा दिये। एक तरफ सत्ता का सिंहासन, अधिकार सुख की मादकता, ऐश्वर्य, समृद्धि और सम्पन्नता का गौरव गुमान और दूसरी ओर अभाव, भटकाव, संघर्ष, जूझ, पराजय के भाव; लेकिन मानवीय मूल्यों का छलकता भंडार। जो मूल्यों के लिए, मानवता के लिए, आजादी के लिए अपना उत्सर्ग करता है वही अमर रहता है। वही प्रताप कहलाता है। ऐसे ही मूल्यों के रक्षक राणा प्रताप और उनके साथी आदिवासी थे जिनकी रग-रग में स्वतंत्रता के, स्वाधीनता के, शौर्य के, सत्व के, गौरव के, देशप्रेम के भावों का पूंजीभूत पौरूष भरा हुआ था।

भारतीय जनजीवन में महाराणा प्रताप स्वाधीनता के प्रतीक प्रात:स्मरणीय बन प्रेरणा के प्रणम्य हो गये हैं। उनमें लोहे को पानी कर देनेवाली ऐसी अतुलनीय ताकत थी कि अपार सैन्यबलधारी और शक्ति सम्राट होते हुए भी अकबर उन्हें पराजित नहीं कर सका। जब राजपूताने के सभी राजाओं ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली तब अकेला प्रताप ही एक ऐसा वीर बांकुरा था जिसने अपने मेवाड़ को अनमित रखा।

राणा की पद धूलि उठाकर, मस्तक पर चंदन करलो।
राष्ट्र देवता के चरणों में, झुको, झुको वंदन करलो।।

-श्यामनारायण पांडेय

प्रताप की माता बेणीजी बड़ी स्वाभिमानी, निर्भीक और बहादुर बलिष्ठ थी। जंगल में रहने और कंदमूल खाने पर उसका रजपूती खून सिंहनी सा खौल उठता था। अपने शावकों को निरन्तर दूध पिलाने पर जैसे सिंहनी का दूध झरता रहता वैसे ही बेणीजी प्रताप को पाले रहती। अपने पुत्र को शक्तिशाली और स्फूर्तिवान बनाने के लिए नारियां अपने दूध के साथ-साथ खरगोश का रक्त मिला सिंहनी का दूध पिलाती थी इसीलिए रजपूत वीर सिंहनी का पूत कहलाता तथा अरिदल पर सिंहनी सा दहाड़ता, खरगोश सा लपक पड़ता था। प्रताप ऐसे ही पूत-सपूत थे।

प्रताप को मेवाड़ के वन-जंगलों, नदी-नालों, मगरे-मगरियों से जो सत्व मिला वैसा ही जीवन तत्व उन्हें वनवासी अपने अनन्य सखा साथी आदिवासी भील-मीणों से मिला। पहाड़ों ने जहां उनका हिया कठोर और हाड़ मजबूत किया वहां जंगलों ने दुश्मनों से जूझने का जोश और जलवा दिया। उनके जैसे वन-शेर के रहते किसकी मजाल कि कोई अन्य शेर अपनी दहाड़ दे पाये। वे शेरों में शेर 'वन शेर' थे तो जन-जन में अव्वल 'जन शेर' थे। यदि किसी से वैरभाव था तो वह युद्ध के मैदान में; अन्यथा तो उनका सबके साथ मैत्रीभाव ही था।

उदयपुर में मोतीमगरी पर फकीरवेश में आये अकबर को पहचानते हुए भी प्रताप ने वैरभाव भुलाकर उसे रोटी दे विदा किया।

प्रताप को पराक्रमी बनाने के लिए देवलिया के स्वामी रायसिंह ने युद्ध के शस्त्र और शास्त्र में पारंगत किया तथा सत्ता, शासन, संघर्ष एवं स्वाधीनता का बीज-मंत्र दिया। तब पोथियों की पढ़ाई नहीं होती थी। कोई बुजुर्ग, कोई शाह, कोई बड़ेरा, कोई दीवान होता जो ज्ञान देता। पढ़ाई के नाम पर प्रताप मात्र मोटे अक्षर लिखना जानते थे।

मीणे जानते थे कि प्रताप के पास अकबर की तुलना में सैन्यबल, राजशक्ति और शासन समृद्धि कुछ भी नहीं है किन्तु वे यह भी जानते थे कि चूहे में बिल्ली से कई गुनी अधिक ताकत होती है किन्तु चूहा चूंकि बिल्ली को देखते ही असहाय हो जाता है और डर के मारे आंख मीच लेता है तब बिल्ली का वार चलता है और वह सहज ही उसे दबोच खाती है। मीणे निरन्तर प्रताप को प्रोत्साहित करते और कहते कि हमारा राजा कोई है तो प्रताप ही है। हम खून की नदियां बहा देंगे, दुश्मन की बोटी-बोटी उड़ा देंगे किन्तु किसी अन्य को राजा अथवा राणा नहीं मानेंगे।

- शेष पृष्ठ सात पर

कोनी कोरो नांव रेत रो हळदीघाटी

कोनी कोरो नांव रेत रो हल्दीघाटी,
अठै उग्यो इतिहास पुजी जै ईं री माटी।
कण-कण घण अणमोल रगत स्यूं अंतस भीज्यो,
नहीं निछतरी भौम गिगन रो हियो पतीज्यो।
गूंजी चेतक टाप जुद्ध रा ढोल घुरीज्या,
पड़ी ना, र री थाप जुलम रा पग डफलीज्या।
राज्यो रण घमसाण बाण स्यूं भाण ढकीज्यो,
लसकर लोही झ्याण अथग खांडो खड़कीज्यो।
मूंघी मोली राड़ स्याल स्यूं सिंग अपडीज्यो,
दब्यो दरप रो सरप सांतरो फण चिगदीज्यो।
नहीं तेल नारेल भटां रामूंड चढ़ीज्या,
धड़ लड़ धोया कलख जबर दुसमण रलकीज्यो।
दीन्ही गोड़ी टेक अठै आयोड़ी हूणी,
माथै लगा बभूत पूत जामण री धूणी।
थिरचक डांडी साच पालड़ै तीरथ तुलीजै,
ईं री चिमठी धूल बापड़ो सुरग मुलीजै।

-कन्हैयालाल सेठिया

जब नाथूसिंहजी महियारिया ने मृत्यु शैय्या पर लिखे प्रतापी सोरठ

-प्रो. देवकर्णसिंह राठौड़-

वीर कवि नाथूसिंहजी महियारिया ने झाला मान पर तो शतक लिख दिया पर महाराणा प्रताप पर उनकी कलम नहीं चली। पूछने पर कविजी ने अपनी कसक बताई कि प्रताप हल्दीघाअी युद्ध में क्यों नहीं खप गये ? क्यों डाका देकर मगरों में भाग गये? किंतु जब कविजी मृत्यु शैय्या पर थे मैंने यही बात पुन: छेड़ दी तब उन्होंने मुझे दो सोरठे सुनाये जो उस कवि की प्रताप के प्रति शौर्य भक्तिपूर्ण मरणधर्मा श्रद्धांजलि ही कही जा सकती है। सोरठे थे-

नृप करवा नजराण, शाह अमां झुकिया सरब।
भूप पतो हिन्द भांण, झुकियो खगवाही जठै।।

अर्थात्- सभी राजा नजराणा करने के लिए अकबर के सम्मुख झुकते रहे पर प्रताप ही ऐसा था जिसने जहां-जहां तलवार चलाई वहां-वहां तलवार चलाते वक्त झुकना पड़ा।

रीत रमण री राण, पड़ियो किण घर आहड़ा।
वद-वद खाग वजाण, झुकणो कमधां कछवाहा कठै ?

अर्थात्- हे आहड़ा राणा प्रताप! मुगलों के सामने झुकने की तुमने यह रीत कहां से सीखी? युद्ध में शत्रुओं को काटने के लिए आगे बढ़-बढ़ तलवार चलाते हुए तुम्हारी तरह झुकना कछवाह और राठौड़ शासक क्या जानें?

-पीछोला 16 जून 1980 से साभार

स्मृतियों के शिखर (10) : डॉ. महेन्द्र भानावत

आशियाजी जो 'महाभारत रूपक' नहीं देख पाये

जो ग्रंथ उन्होंने अकादमी को छपने दिया था, उसी ग्रंथ की प्राप्ति के लिए जीतेजी वे सबओर भटकते रहे। अपने जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि के यूं नदारद हो जाने का जो खेद आशियाजी को रहा, उसे कोई लेखक ही महसूस कर सकता है।

डिंगल गीतों के होनहार आशुकवि सांवळदान आशिया का जन्म नाथद्वारा तहसील के कड़िया गांव में हुआ। उदयपुर से हल्दीघाटी के रास्ते कड़िया गांव प्राचीन कवियों का गांव रहा है। सांवळदानजी के पिता देवीदान के बाद, हरदान, कीरतराम, बखतराम, सूरजमल, तेजराम पिता-दर-पिता हुए। सभी अच्छे पहुंचे हुए कवि थे।

बचपन में ही सांवळदानजी के पिता का निधन होने से उनका लालन-पालन बड़े पिता रामलाल ने किया। उन्हीं से सांवळदानजी को डिंगल गीतों की रचना करने की सीख मिली। उन्होंने हजारों डिंगल गीत उन्हें मुंहजबानी याद कराये। रामलालजी ने भी कई गीत लिखे। बखतरामजी मेवाड़ महाराणा जवानसिंह (संवत् 1885-95) के समय हुए। उन्होंने इन महाराणा के जीवन चरित्र से जुड़ा 'कीरत प्रकाश' नामक ग्रंथ लिखा जो बड़ा प्रसिद्ध हुआ। उसी काल में किसना आढ़ा अच्छे कवि हुए जिनसे महाराणा ने कविता करना सीखा।

महाराणा जवानसिंह कविता में अपना नाम 'ब्रजराज' लिखते थे। उन्होंने कई पद लिखे। इन पदों का संकलन मैंने 'ब्रजराज-काव्य-माधुरी' नाम से किया। इसका प्रकाशन साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ से सन् 1966 में हुआ जब डॉ. मोतीलाल मेनारिया डायरेक्टर थे और मैंने उनके सान्निध्य में शोध अधिकारी के रूप में कार्य कर उसका संपादन किया। सांवळदानजी भी यहीं सेवारत थे।

डिंगल गीतों के संग्राहक के रूप में सांवळदानजी ने वहां रहकर मेवाड़ के ठाकुर-जागीरदारों के संग्रह से सैकड़ों डिंगल गीतों का संग्रह किया। गीतों के अलावा पट्टे-परवाने-शिलालेख तथा अन्य इसी तरह की अलभ्य सामग्री उन्होंने संस्थान के लिए जमा की। इसी संस्थान से प्राचीन राजस्थानी गीत नाम से बारह भागों का प्रकाशन हुआ। इनमें से प्रथम दो भाग आशियाजी द्वारा संपादित हैं। इन भागों में अज्ञात कवियों के गीतों के अलावा आशियाजी द्वारा रचित गीत भी हैं।

आशियाजी स्वभाव से बड़े सरल और मिजाज से बड़े ठंडे थे। फालतू की माथाफोड़ी से सदा दूर रहते। हमारी गप्पबाजी में भी शरीक नहीं होते पर उनकी-मेरी बैठक पास-पास होने से मैं उन्हें मुखर किये रहता। वे चुपचाप बैठते तो गीत-रचना में लगे रहते। वे सदा स्वस्थ मन और स्वस्थ पोशाक में नजर आते। सफेद धोवती, ऊपर सफेद लंबी बाहों का कमीज और सिर पर सफेद पगड़ी। पूरे समय में दो-चार बार वे अपने हाथों की अंगुलियों से अपनी श्वेत मूंछों की किनारी को मरोड़ी देकर भलकादार किये रहते। गले में काले धागे से बंधी कमीज में जेब घड़ी पड़ी रहती। पांवों में मेवाड़ी जूतियां पहनते जिन्हें वे पगरखियां कहते।

सांवळदानजी का सबसे मोटा और महत्वपूर्ण काम 'महाभारत रूपक' नामक ग्रंथ की रचना का है। यह डिंगल गीतों की 186 जातियों के गीतों का लक्षण ग्रंथ है जो महाभारत का ही गीतमय रचाव है। यह डिंगल और उसकी चाल के लक्षण गीतों का अंतिम ग्रंथ कहा गया है।

उनके जीवन की यादगार घटना बिड़ला शताब्दी समारोह 5 अप्रेल 1962 के अवसर पर ब्रजमोहनजी बिड़ला द्वारा उन्हें 3 अप्रेल 1962 को कलकत्ता के बुलावे की है। इस मौके पर आशियाजी बड़े उत्साह और उल्लास के साथ पहुंचे। कलकत्ता से लौटकर आशियाजी ने बताया भी कि उनका वहां बड़ा अच्छा स्वागत, मान-सम्मान रहा। बिड़लाजी की यशकीर्ति में उन्होंने अपने लिखे जो दोहे सुनाये वे भी बड़े सराहे गये। बिड़लाजी का जैसा नाम था वैसा ही उनका आदर-सत्कार हुआ।

इस अवसर पर आशियाजी ने अपने द्वारा रचित 'महाभारत रूपक' ग्रंथ की पांडुलिपि भी बिड़लाजी को दिखाई और उसके प्रकाशन हेतु आर्थिक सहायता प्रदान करने का अनुरोध किया। बिड़लाजी ने उनकी बात को बड़े ध्यान से सुना। कुछ छंद भी उन्होंने सुने जिसका गंभीर प्रभाव भी आशियाजी ने देखा। बड़ी खुशमिजाज स्थिति में बिड़लाजी ने आशियाजी को जयपुर भैयाजी को लिखने की राय दी। आशियाजी ने भैयाजी को पत्र लिखा। भैयाजी ने उसे प्रकाशित कराने का अनुमानित खर्च जानना चाहा कारण कि वह करीब 500 पृष्ठों का ग्रंथ था। प्रेसवाले ने 5 हजार रूपयों का एस्टीमेट दिया जिसे आशियाजी ने भैयाजी को लिख भेजा किंतु अंत में उन्हें निराशा ही मिली।

कुछ मित्रों की राय से लगभग दो माह बाद उन्होंने कलकत्ता ब्रजमोहनजी बिड़ला को पत्र लिखा। उस पत्र की एक प्रति मुझे उनके सबसे बड़े पुत्र भैरूसिंह ने लाकर दी। भैरूसिंह भी तब साहित्य संस्थान में ही सेवा देते थे। बाद में वे पुलिस की नौकरी में चले गये। यह पत्र इस प्रकार था-

सेवामें
श्री मान्यवर महोदय ब्रजमोहनलालजी सा. बिड़ला
कलकत्ता
सादर वन्दे

थोड़ाक म्हीनां पैली आपरौ कागद मिल्यौ। वनै भण इण तरै री खुसी व्ही कै आपसूं मिलणो हुयग्यौ है। अठै म्हां सगऴा आपरी अनुकम्पा सूं कुसल हां। म्हां सदा आपरी कुसलता री ईश्वर सूं प्रार्थना करां हां।

म्हूं जद 5-4-62 नै आप द्वारा आमंत्रित कियोग्यो वदी म्हारो रच्यौ एक डिंगल गीतां रो लक्षण ग्रंथ जी मांय 186 जाति रै गीतां रा लक्षण अर महाभारत रौ उलथो उदारण रै गीतां मांय दियोग्यो हो आपनै बताय वींरै प्रकासण खातर आपनै निवेदन कीदौ हो। आप म्हनै जयपुर भैयाजी सूं बात करण रौ फरमायो हो। भैयाजी सूं म्हैं बात कीधी। वां ईरै प्रकासण रै खरचे रौ एस्टीमेट मांग्यो। प्रेसवाला सगळा पांच हजार रो एस्टीमेट दीधौ कारण के पांच सौ पेजां रौ ग्रंथ रौ प्रकासण है।

भैयाजी आपसूं बात कर म्हनै उत्तर देवण नै कयौ। थोड़ा दनां बाद भैयाजी रो कागद मिल्यौ वनै भण अचरज व्यौ। उत्तर लिख्यौ कै इण बखत सरकार कानी सूं कर लगाया गया जिणसूं अर्थाभाव सूं पुस्तक रौ प्रकासण मुश्कल है। म्हूं मानूं कै आज बिड़लाजी जेड़ा धनकुबेर चावै तो हिन्दुस्तान खरीद सकै है। करां रै बहाने सूं राजस्थानी डिंगल ग्रंथ रौ प्रकासण नी व्है सकै या बात कणी भी साधारण व्यक्ति री समझ जोग नी है। बिड़लाजी रै विसै में यो दुवो यथार्थ घटना है-

द्वारपाल जस धरम दऊं कर कुबेर लेखाह।
नीर भरीजैं लच्छमी घर गुपते बिड़लाह।।

भैयाजी रै उत्तर पछै दो कागद आपने भेज्या पण भैयाजी रे केणै मुजब आप वण वगत कलकत्ता नी बिराज र्‌या हा। वंडे केड़े पोथी छपावण खातर अठै मेवाड़ रै ठिकाणेवाला सिरदारां अर दूजी ठौड़ सूं करीब 3 हजार रिपिया एकठा कर लीधा है। अबै मातर दो हजार रिपिया खातर काम रूक रियो है। अणा रिपिया रो प्रबंध अठै होवण री संभावना नी है इण खातर या रकम म्हूं आपसूं चावूं हूं।

राजस्थानी विद्वान नारायणसिंहजी भाटी, रावत सारस्वत, लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, मोतीलालजी मेनारिया आदि रौ सुझाव है कै इण ग्रंथ रौ प्रकासण फटाफट व्है जावे तो आच्छो है कारण कै एक तो यो राजस्थानी मांय महाभारत रौ उल्थो है जो कै आज तांई इण भाषा में महाभारत रौ कणी उल्थो नीं कीधौ। दूजो 186 जाति रै डिंगल गीतां रौ लक्षण ग्रंथ उदारण साथै है जो कै शोध खोज द्वारा पैला रा लक्षण ग्रंथां सूं इण मांय गीत संख्या बत्ती है। यो ऐड़ो ग्रंथ राजस्थानी मांय आज रै जुग में गद्य मांय दीधा थका लखणां रौ आखरी ग्रंथ है या राय कई विद्वानां री है। यूं अणी ग्रंथ नै कुछ संस्थावां खरीदण री मांग करी है अर रोयल्टी पै भी प्रकासण करणो चावै है पण अणां दोयां में म्हनै नुकसाण है। अबै तो कमी फगत दो हजार री है। ई री पूर्ति म्हूं आप सूं चावूं। आप जेड़ा साहितप्रेमी अर उदार गुण गाहक करदेसी या म्हारी निश्चित धारणा है। लोग केवै भी कै म्हारै माथै बिड़लाजी जेड़ा रा वरद हस्त है। वी चावेगा जदी छप जासी।

म्हारो पैलां सूं विचार हो कै अणी ग्रंथ नै आप जेड़ा धनकुबेर नै भेंट कियो जाय पण भैयाजी रे उत्तर सूं तुषारापात हुयग्यौ। कई, म्हूं आश करूं कै ई रो प्रकासण आप जेड़ा लक्ष्मीपुत्र सूं ही सुरसत रै वरद पुत्रां रै काज व्है सकै। कवि कालिदास री अणी उक्ति सूं आग्रह करूं तो अनुचित नी है- याञ्चा मोघा वर माघिगुणे ना धम लब्ध कामाः। कालिदास रै श्लोक रै पद जेड़ो एक म्हारौ भी दुवो निवेदन है-

तू सुतंत्र लछमी तणो हूं सुत सुरसतरोह।
बिड़ला बंधव मास्यायती किवरी मदद करोह।।

उत्तराभिलासी सांवळदान आशिया
मुकाम मोहळा लालघाट
उदयपुर, आशिया हाउस
काकरवा हाउस रै सामै
ता. 6-6-64

कलकत्ता में निवास के दौरान आशियाजी ने कलकत्ता बावनी लिखी। भैरूसिंहजी ने मुझे दोहे-सोरठे में लिखी इस बावनी की प्रतिलिपि दी जिस पर लिखा था- कलकत्ता बावनी रा दोहा अर सोरठा ता. 3-4-62 नै ब्रजलाल बिड़ला बुलायो।

आशियाजी ने राजस्थानी रूपक ग्रंथ मुझे भी दिखाया। मैंन उनसे सारी बात सुन राजस्थान साहित्य अकादमी से इसे छपाने हेतु कहा। उस समय स्वतंत्र रूप से राजस्थानी भाषा साहित्य की अकादमी नहीं थी सो राजस्थानी संबंधी कार्य भी इसी अकादमी के जिम्मे था। आशियाजी उस ग्रंथ को लेकर अकादमी पहुंचे। तब वहां अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा, निदेशक डॉ. राधेश्याम शर्मा, सहायक सचिव ओंकारश्री तथा उपसचिव डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना थे।

ओंकारश्री ने मुझे बताया कि आपातकाल के समय में एक दिन अल सुबह आशियाजी उनसे मिलने उनके भूपालपुरा निवास पर आये। फफकते हुए बोले- 'श्रीजी म्हूं तो श्रीहीण होग्यौ। अकादमी म्हारी जीवण भर री साधना धूलभेरी कर दीधी। आप पैली इनै स्वीकृत कर अकादमी सूं प्रकासण करण री बात लिखी ही। अबै इमरजैंसी री म्हां माथै किटकी पड़गी। या आपातकाल री डाकण म्हारो भख लैवण नै तुली है। म्हूं अणी डिंगल छंद भाष्यपरक काव्य रौ सराप झेलण इरौ स्यापो डालण आयो हूं। म्हारी पागड़ी री लाज लुटगी। आपरै सिवा किरै आगे रोवूं रींकूं।'

ओंकारश्री ने आशियाजी की सारी बातें बड़े धैर्य के साथ सुनी और धीरज बंधाते उनका दुख हल्का किया। भोजन की सरवरा की फिर मज धोळे दुपेरे लुआं झेलती लाय में वे उन्हें आकाशवाणी केंद्र ले गये। वहां हिंदी-राजस्थानी के प्रसारण अधिकारी हरिहरनारायण भटनागर से उन्हें मिलाया। भटनागरजी ने आशियाजी से उनके लिखे छह छंद-गीत लिखवाये और उनका रेकार्डिंग कर यथासमय प्रसारण किया।

अब तो आशियाजी और ओंकारश्री भी नहीं रहे किंतु आशियाजी के रहते जो ग्रंथ उन्होंने अकादमी को छपने दिया था वह ग्रंथ अकादमी में नहीं है फिर किसके पास, कहां चला गया? उसी ग्रंथ की प्राप्ति के लिए जीतेजी आशियाजी सबओर भटकते रहे। अब तो सारी स्थितियां ही और हो गई हैं। अपने जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि के यूं नदारद हो जाने का जो खेद आशियाजी को रहा, उसे कोई लेखक ही महसूस कर सकता है।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जिन्हें मैं जानता हूं	100/-

लक्स सॉफ्ट टच और लक्स वेलवेट टच लॉन्च

उदयपुर। भारत में सबसे पुराने एवं सर्वाधिक प्रतिष्ठित ब्यूटी व बाथिंग सोप लक्स ने दो नये वैरिएंट लक्स सॉफ्ट टच और लक्स वेलवेट टच को परफ्यूम की सुगंध में लॉन्च किया है। इनमें विशेष नई फ्लोरल फ्यूजन ऑयल मौजूद है। लक्स दुनिया भर में प्रत्येक महिला के लिये सर्वश्रेष्ठ ब्यूटी सीक्रेट्स को घर पर पेश करने के लिये मशहूर है।

लक्स सॉफ्ट टच गुलाबी रंग का प्यारा साबुन कोमल त्वचा प्राप्त करने की जरूरतों को पूरा करता है। इसमें मौजूद तत्व त्वचा को अंदर से सेहतमंद, मुलायम और चमकदार बनाते हैं। इसमें मॉयश्चराइजिंग सिल्क एसेंस और गुलाब जल मौजूद है। यह ब्यूटी सीक्रेट त्वचा को रेशम जैसा मुलायम बनाने के साथ ही सुगंधित भी बनायेगा।

लक्स वेलवेट टच मॉयश्चराइजिंग सिल्क एसेंस, जैसमिन और बादाम के तेल के साथ ही नई फ्लोरल फ्यूजन ऑयल से युक्त साबुन है जो त्वचा को अधिकतम नमी प्रदान करता है। इसके साथ ही यह त्वचा को मखमली स्पर्श देता है। यह साबुन शरीर को तरोताजा बनाता है और बेजान त्वचा को चमकदार एवं ताजगीपूर्ण बनाता है। साथ एक मनमोहक खुशबू प्रदान करता है।

पोथीखाना

लोकदेव हरदौल की जनास्था

-डॉ. कहानी मेहता-

बुंदेलखंड में प्रचलित हरदौल गाथा नायक हरदौल की प्रसिद्धि सर्वमान्य लोकदेवता के रूप में जन-जन में व्याप्त है। ये हरदौल एक चबूतरे के रूप में अपनी अवस्थिति दिये मिलते हैं। इनके पास इनके स्वामीभक्त सेवक मेहतर की चबूतरी होती है जिन पर लाल रंग की ध्वजा फहरी मिलती है। हरदौल की प्रतिमा घोड़े पर सवार रूप में, हाथ में भाला तथा पीठ पर ढाल लिये होती है।

जहां मूरत नहीं होती वहां प्रतीक रूप में घोड़ा या फिर पत्थर ही पूजित मिलता है। यह हरदौल मध्यप्रदेश के अलावा पंजाब, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, राजस्थान तक के गांवों में पूजित है। एक प्रभावी देवता के रूप में हरदौल समस्त अनिष्टों से बचाता हुआ हर कार्य पूरी सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने वाला सबका चहेता देवता है।

राजस्थान में गणेश की तरह बुंदेल में हरदौल की सम्मानजनक प्रतिष्ठा है। विघ्न विनाशक के रूप में यह देव सर्वप्रथम स्थापित किया जाता है।

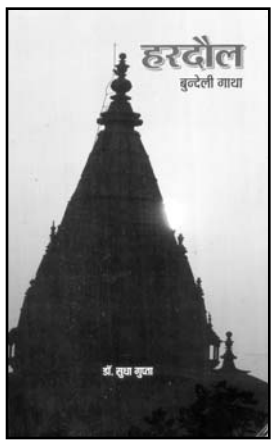

हरदौल बुंदेली गाथा की संपादिका डॉ. सुधा गुप्ता ने हरदौल की ऐतिहासिक इतिवृत्ता से कई प्रमाणों द्वारा पाठकों को परिचित कराने का श्लाघनीय प्रयत्न किया है। उनके अनुसार हरदौल ओरछा नरेश वीरसिंहदेव के पुत्र थे जिनका जन्म सन् 1608 के लगभग माना जाता है। लेखिका ने लोकपक्ष का भी बड़ी बारीकी से अध्ययन कर पुस्तक के प्रारंभ में भूमिका में लिखा है-

'हरदौल के मरने के बाद उनके शोक में एक व्यक्ति तथा कुत्ते ने विषमय अवशिष्ट भोजन खाकर अपने प्राण दे दिये थे एवं उनके सात सौ संगी-साथियों ने भी कटार भौंककर अपने प्राण त्याग दिये। लोक में यह भी प्रसिद्धि है कि हरदौल ने मरने के बाद अपनी बहिन कुंज कुंवरि की बेटी के विवाह में भात दिया था। इतना ही नहीं, दूल्हे द्वारा हठ पकड़ने पर प्रकट होकर उन्होंने दूल्हे एवं सबको दर्शन दिया और अन्तर्ध्यान हो गये। हरदौल के प्रेत द्वारा मुगल बादशाह शाहजंहा आदि को परेशान करना, जिससे भयभीत होकर बादशाह द्वारा अपने राज्य के गांव-गांव में हरदौल के चबूतरे बनवाना और उनकी पूजा हो, जैसी किंवदंतियां भी लोक में प्रचलित हैं।'

हरदौल की गाथा और गीतों से 300 से अधिक पृष्ठों की यह पुस्तक सुदर्शनीय तथा स्थान-स्थान पर भावार्थ, शब्दार्थ तथा आवश्यक टिप्पणियों से शोधग्रंथ का दरसाव ही नहीं देती, यह भी दर्शाती है कि लोक प्रचलित कंठासीन गाथा-गीतों के संपादन की पद्धति की रूपरेखा कैसी होनी चाहिये और पुस्तक को सर्वांग उपयोगी एवं लोकपक्षीय सर्वग्राहय बनाने के लिए कितनी मेहनत, ज्ञानशक्ति तथा समझशक्ति की जरूरत होती है। इसके लिए संपादिका डॉ. सुधा गुप्ता को बधाई। भोपाल की आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी द्वारा प्रकाशित यह कृति मात्र 50 रूपये मूल्य की है। ऐसी सुंदर और इतनी सस्ती कृति शायद ही कहीं उपलब्ध हो।

'पीथल खींची रो जुद्ध'

-डॉ. प्रतिभा भट्ट-

इतिहास की गवाही लेती लोक प्रचलित यह गाथा पृथ्वीराज खींची के शौर्य पराक्रम को दरसाती है। पीथल के रूप में पृथ्वीराज इस गाथा का धीरोदात्त नायक है। राजस्थान के हाड़ौती प्रांत में मालवा से सटे क्षेत्र गागरोन मऊ मैदाना (मऊ बोरदा) की रक्ताभ पहाड़ियां, हरित वादियां, जहां हाड़ा चौहान की राजसत्ता सदियों तक कायम रही व मऊ मैदाना के इन चौहानवंशीय खींची राजाओं ने अपनी आन बान व शान के लिए मानवीय धर्म का निर्वहन करते हुए अपने ही वंश-खांप के सत्ताधीशों से संघर्ष करना पड़ा। यहां तक कि मुगलों की सहायता लेकर बूंदी के हाड़ाओं ने खींची (चौहानों) को युद्ध के लिए विवश व खींची चौहानों के सेनापति पीथल ने प्रतिकार कर अपने जीवन का उत्सर्ग करते हुए मातृभूमि के प्रति कर्तव्य का पालन किया, वह अनिवर्चनीय है।

डॉ. पूरन सहगल द्वारा संकलित 1040 कड़ों की यह कृति राजस्थान के हाड़ौती प्रांत से सटे क्षेत्र गागरोन मऊ मैदाना से संबंधित है। इस गाथा को लोक तक पहुंचाने का कार्य जगत्या भील ने किया। यह पीथल की सेना में काल्या भील का वंशज था। डॉ. सहगल ने इस लोकगाथा को लोक से संचित करने में स्तुत्य प्रयास किये हैं। इसके लिए उन्हें अनेक लोगों से मिलना पड़ा। अनेक गायकों से पूछताछ करनी पड़ी और पग-पग पापड़ बेलने पड़े।

सदियां बीत गई। उजाड़ नदी के किनारे मऊ के महलों की प्राकृतिक सुषमा, भव्यता, आज भी पर्यटकों व इतिहास प्रेमियों को आकर्षित करती है। मऊ के पास ही स्थित था मैदाना। इसी मैदाना में था सेनानायक पीथल, योद्धा।

पूरे खींचीवाड़ा में पीथल की लोकगाथा आज भी जन-जन के बीच पूरे गर्व और सम्मान से कही सुनी जाती है। पूरी गाथा में पीथल के मामा चेदा डोडिया और पीथल के बीच नैनसुख नामक घोड़े को लेकर गाथा शुरू होती है जो महाभारत के समान बड़े भयानक युद्ध के बाद पीथल के प्राणोत्सर्ग पर समाप्त होती है।

गाथाकार ने अकबर, मानसिंह, बूंदी के हाड़ा नरेशों व मऊ मैदाना के खींची नरेशों के बीच तत्कालीन राजनैतिक परिप्रेक्ष्य को बहुत सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है। डॉ. संजय स्वर्णकार ने इस कृति में पूर्व पीठिका, भूमिका व परिचयात्मक आमुख का जो क्रम निर्धारित किया उसमें पाठक को इस गाथा को समझने में अवश्य ही सरलता होगी। डॉ. पूरन सहगल ने गद्य-पीठिका तैयार की है जो इस गाथा को मणि काचंन संयोग देती है। पूरी गाथा एक सफल चल-चित्र की तरह पाठक को बांधे रखने में सक्षम व समर्थ है।

इसी कृति में मऊ मैदाना की वादियों में गूंजती शूरवीर परथीराज की लोक विश्रुत अमरगाथा-शीर्षक से लिखी भूमिका हमें इस कृति के एक-एक शब्द और उसके निहितार्थ पर मनन की प्रेरणा देती है। यह लोकगाथा मालवी लोकसाहित्य की ही नहीं अपितु समस्त लोकमानस के लिए महत्वपूर्ण दस्तावेज है। लोकसाहित्य का पाठक डॉ. सहगल के श्रम के प्रति सदैव ऋणी रहेगा।

जिंक के पवन कौशिक 'शान-ए-राजस्थान' से सम्मानित

उदयपुर। जयपुर में ज़ी न्यूज राजस्थान द्वारा आयोजित सम्मान सामारोह में मुख्य अतिथि राजस्थान के राज्यपाल कल्याण सिंह ने हिन्दुस्तान जिंक के पवन कौशिक को सामाजिक सरोकार के कार्यक्रम 'सखी' व 'खुशी' के लिए सम्मानित किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि राज्य महिला आयोग की अध्यक्षा श्रीमती सुमन शर्मा थी।

उल्लेखनीय है कि श्री कौशिक हिन्दुस्तान जिंक में पिछले 9 वर्षों से कार्यरत हैं। वे ना सिर्फ हिन्दुस्तान जिंक अपितु वेदान्ता समूह के भी मुख्य कम्यूनिकेशन्स प्रोजेक्ट्स देखते हैं। ज़िंक द्वारा ग्रामीण बाल विकास अभियान 'खुशी' तथा ग्रामीण महिला सशक्तिकरण के अभियान 'सखी' के श्री कौशिक फाउण्डर हैं। इनकी बनाई 'खुशी' फिल्म एक करोड़ 50 लाख लोगों तक पहुंच चुकी है।

श्री कौशिक जिंक में पद ग्रहण करने से पहले केन्द्रीय सरकार के अनेकों महत्वपूर्ण अभियानों के साथ जुड़े रहे हैं।

भारत सरकार के एडवरटाईजिंग एण्ड विजवल पब्लिसिटी निदेशालय में पदभार के दौरान केन्द्र सरकार की नई आर्थिक नीति, ग्रामीण विकास, एड्स जागरूकता, टीकाकरण, बाल शिक्षा, आयकर, राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव, भारतीय स्वतंत्रता के 50 वर्ष, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव, नशा विरोधी जैसे महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील सामाजिक एवं आर्थिक विषयों के प्रचार अभियान को निर्देशित कर प्रतिपादित किया है।

शीघ्र प्रकाशित

मोलेला की मृण-मूर्ति-कला

लेखिका
डॉ. कहानी भानावत

विश्वप्रसिद्ध हल्दीघाटी के निकट बसे उदयपुर संभाग के छोटे से गांव मोलेला के कुम्हार परिवारों द्वारा निर्मित लोक देवी-देवताओं की माटी की मूर्तियों पर पहली बार लोकधर्मी समाजशास्त्रीय अध्ययन। आर्यावृत्त संस्कृति संस्थान, दिल्ली से प्रकाशित।

''यदाकदा ही ऐसी पाण्डुलिपियां सामने आती हैं जिन्हें आप एक बैठक और विशेष एकाग्रता के साथ पढ़ लेते हैं। इस पाण्डुलिपि को मैं एक ही बैठक में मात्र पचास मिनिट में पढ़ गया। मुझे आश्चर्य है कि इतने पृष्ठों की पूरी पाण्डुलिपि कैसे पढ़ ली। जब तक आप स्वयं इस पुस्तक को नहीं पढ़ेंगे तब तक 'कहानी का करिश्मा' और मोलेला की मिट्टी का मतलब आपकी समझ में नहीं आयेगा। पुस्तक की पाठकीयता को कहानी ने गुदगुदाया है। एक स्मित, एक मुस्कराहट चेहरे पर लाइये और मोलेला की मिट्टी को माथे पर लगाइये। शायद आपके ललाट के लेख सुगंधित हो जायें।''

-बालकवि बैरागी द्वारा लिखित पुस्तक की भूमिका से

ट्रक चालकों और किसानों के लिए 'रीयल डेस्टिनेशन' अभियान

उदयपुर। शेल ल्यूब्रिकेंट्स ने 'रीयल डेस्टिनेशन' अभियान शुरू किया है। 'रिमूला' रेंज के ल्यूब्रिकेंट्स के लिए इस ग्राहक केंद्रित पहल का लक्ष्य रिमूला के सभी उपयोगकर्ताओं-ट्रक मालिकों, फ्लीट प्रबंधकों, मैकेनिक्स, किसानों और छोटे वाणिज्यिक वाहन (एससीवी) मालिकों के साथ साझेदारी कर उनके जीवन की वास्तविक मंजिल तक पहुंचने में मदद करना और उनके जीवन में खुशियां लाना है।

शेल ल्यूब्रिकेंट्स इंडिया की मुख्य मार्केटिंग अधिकारी सुश्री मानसी त्रिपाठी ने कहा कि ब्रांड के साथ ग्राहकों के व्यक्तिगत जुड़ाव को प्रदर्शित करने के लिए शेल ट्रक चालकों, किसानों के जीवन की वास्तविक मंजिल और उसे हासिल करने की कहानियों को साझा करने के लिए उन्हें आमंत्रित कर रही है। ग्राहक ब्रांड के साथ अपनी वास्तविक मंजिल को साझा करने के लिए 18001026073 पर कॉल कर सकते हैं। शेल प्रत्येक क्षेत्र की शीर्ष कहानियों को छांटेगी और उन्हें पुरस्कृत करेगी। चुनी कहानियों का रेडियो पर प्रसारण होगा। विजेता को एक साल के लिए शेल रिमूला आर4 की आपूर्ति करने का पुरस्कार दिया जाएगा, वहीं राष्ट्रीय स्तर के विजेता को एक साल तक शेल रिमूला आर4 के साथ ही 50,000 रुपये का नकद पुरस्कार दिया जाएगा।

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 1 जून 2016

प्रताप के ताप से संताप मिटते

महापुरूषों का ताप कई तरह के संतापों से मुक्त करने वाला होता है। जो संघर्षों से जूझकर जनहितार्थ कार्यों द्वारा अपने को तपित करता है उसी का ताप संताप हरने की सामर्थ्य लिए होता है। राणा प्रताप का ताप ऐसा ही था। वे शुद्धात्मा लिए समुद्र सी गरिमा लिए थे। घर आए दुश्मन पर भी उन्होंने कभी वार करना तो दूर, सम्मान करना ही उचित समझा। वैरी जहां है वहीं वैरी है। युद्ध तो ललकारमय ही अच्छा लगता है। मजबूरी में किसी के साथ वार कर अपना दमखम दिखाने वाला उनकी दृष्टि में कभी वीर नहीं रहा।

प्रताप वीर थे पर युद्धोन्मादी नहीं थे। प्रचंड आत्मबल के धारक थे तथा देशप्रेम उनमें कूट-कूट कर भरा था। वे लड़े तो देश के लिए, उसकी अखंडता के लिए, जन-धन की रक्षा के लिए, मातृत्व पर आए संकट से उबरने के लिए न कि सत्तासीन होने के लिए। राजसत्ता प्राप्त करने के लिए। सत्ता का मद तो उनमें था ही नहीं। वे तो स्वयं मानते थे कि सत्ताकामी व्यक्ति अंतत: अपने ही लोगों से पराजय का मुख देखता है। वे शुद्ध रूप से जननायक थे इसीलिए सभी जन उनके पक्षधर थे और सर्वलोक ही उनका संबल था। वह संबल ही उनका ताप था। बूंद-बूंद कर जैसे समुद्र गहराता है वैसे ही जन-जन के ताप ने प्रताप को उन्ताप बना दिया था। इसके सामने अकबर का संताप कहीं नहीं ठहरा।

ऐसे लोकनायक किसी काल अथवा युग विशेष के ही नहीं होते। वे सर्वकाल तथा सर्वयुग में प्रासंगिक बने रहते हैं। सच ही है, स्वतंत्रता को प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार समझ उनके लिए समूहबद्ध होकर अपने प्राणों तक का दाव लगाने वाला व्यक्ति सबका प्रिय भाजन होता है। प्रताप ऐसे ही व्यक्ति थे इसीलिए उनका ताप अकबर जैसे साम्राज्य द्वारा पैदा किये गये संताप को भी चुटकी में हवा कर सका।

पत्र-पिटारी

शब्द रंजन से सुकून मिलता है

शब्द रंजन के आठों अंक एक साथ देखे। रात को जागरण करके एक-एक अंक को देखा। आपके इस पत्र का उद्देश्य विचार एवं संवाद का है। मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि ऐसे पाक्षिक अखबार की और नितांत आवश्यकता थी। पहले अपने यहां से कई पत्र-पत्रिकाएं निकलती रही हैं लेकिन आपके इस पाक्षिक से मुझे बहुत सुकून मिला है। पहला प्रवेशांक ही महत्व रखता है। राजनेताओं की उठापटक, जनता सब जानती है जैसे एक जिला स्तरीय समस्याओं के समाचार महत्वपूर्ण हैं वहीं 'स्मृतियों के शिखर' याद रखने योग्य है। इन सभी आठ अंकों में जिनकी स्मृतियां आपने प्रस्तुत की हैं वे स्मरणीय हैं। क्या ही अच्छा होता कि शिखर की जगह झरोखा नाम रखते, हवेलियों के झरोखे राजस्थानी संस्कृति में आबाद हैं।

आजकल फर्जी लेखक, कवि पैदा हो गये हैं जो दूसरों की रचना अपने नाम पर बेखटके छपवा रहें हैं। आपने मेरा दर्द सुनने के बाद अपनी बात स्पष्ट की। 'लेख एक और लेखक दो' में इसका आपने पर्दाफाश भी किया और बाद में पटाक्षेप भी कर दिया। मुझे तो आपकी तरह ही अब इस चौर्यकला को लेकर भय लगने लगा है कि मौलिक रूप से लिखकर, मेहनत करके सजाया, संवारा आलेख-कविता या और भी रचनाएं यदि चौर्यकला की हो जाती हैं तो अचरज और हंसी तो आती है लेकिन जब अगला धमकी देता है कि मैं अदालत जाऊंगा और आपको जेल भिजवा दूंगा।

मेरी तो घिघ्घी बंध गई। यह तो गनीमत है कि तुलसीदासजी की जगह फुलसीदास नहीं हुआ, वरना तुलसीदासजी भी मेरी तरह हनुमान चालीसा की ये चौपाई जपते-

सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रच्छक काहू को डरना।
आपन तेज सम्हारो आपे।
तीनों लोक हांक से कांपे।
चौर्य लेखक निकट नहीं आवै।
महावीर जब नाम सुनावै।
भागै चौर्य हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा।

सो में तो ऐसे चौर्य लोगों से हनुमान चालीसा का पाठ जपता हूं।

-हरमन चौहान, उदयपुर

कुक्की को कौन पहचानेगा ?

शब्द रंजन के अंक 9 में शैलचित्रों के बारे में डॉ. कहानी भानावत का विस्तृत आलेख सचमुच में चकित करनेवाला है। यह तो कुक्की की भलमनसाहत है कि इतने बड़े खोजक किरणा की दुकान चला रहे हैं। विदेश में होते तो किसी बड़े शिक्षा-संस्थान के निदेशक होते। जब बिना पढ़े नेता देश चला सकते हैं तो कुक्की जैसे, शोधक-खोजक क्या नहीं कर सकते। कई प्रोफेसरों ने कुक्की की खोजों से अपना झोला भरा है। सम्मान पाया है। राज्य सरकार ने राजस्थान रत्न पुरस्कार देना प्रारंभ किया पर गत कुछ वर्षों से उसे ऐसा कोई रत्न ही नहीं मिल रहा है जिसे सम्मानित किया जा सके। जाहिर है, कुक्की जैसे लोग कहां से ? किससे ? अपने लिए कुछ कहाये ? सब ओर दूसरों की तख्तियां नजर आ रही हैं।

-विकल्प, इलाहाबाद

बेबी जन्म पर स्वर्ण सीढ़ी आरोहण

भारतीय संस्कृति विश्व की अनुपम, अनूठी, विशिष्ट संस्कृति है। इसमें मानव जाति की सार्थकता हित सोलह संस्कारों के साथ त्रिऋण- देव, ऋषि एवं पितृ का नियमन किया हुआ है। स्वर्ण सीढ़ी आरोहण की परंपरा पौत्र जन्म से रही किंतु शांतिचन्द्रजी बाबेल ने पौत्री जन्म की खुशी में यह आयोजन रखा जो आदर्श-अनुकरणीय है। उल्लेखनीय है कि शांतिचन्द्रजी तुलसी अमृत निकेतन नामक शिक्षण संस्था के संस्थापक हैं जहां से पढ़े छात्र-छात्राएं प्रतिवर्ष ही टोपर बन शिक्षा नगरी कानोड़ के नाम को रोशन किये रहते हैं।

चौथी पीढ़ी में श्रीमती राजकुमारी एवं श्री रमेश कुमार बाबेल की सुपौत्री तथा श्रीमती रेखा एवं श्री पंकज कुमार की सुपुत्री आयुष्मती स्वरा के आगमन से कानोड़ के बाबेल परिवार में विपुल हर्ष बरस पड़ा। पड़दादाजी-पड़दादीजी श्री शांतिचन्द्रजी एवं श्रीमती कमलादेवीजी बाबेल के आनंद उगास का पारावार न रहा।

इस स्वर्ण अवसर के सुलभ होने पर आत्मज श्री रमेशकुमार ने पिताश्री एवं मातुश्री को स्वर्ण सीढ़ी आरोहण कराने का मानस बनाया। बेटी के आगमन पर स्वर्ण सीढ़ी का आयोजन समाज के लिए एक मिसाल बने इसी दृष्टि से वैशाख कृष्णा 12, बुधवार 4 मई को स्वर्ण सीढ़ी आरोहण व स्वरा के ढूंढ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। पितृऋण की अदायगी का यह पुण्य अद्वितीय था। स्वर्ण सीढ़ी आरोहण सम्मान से पड़भुवाजी श्रीमती सज्जनदेवीजी एवं पड़फूफाजी डॉ. धनेशजी भाणावत को भी इस अवसर पर सम्मानित किया गया। स्वर्ण सीढ़ी का सोना बहू, बेटियों तथा नजदीकी रिश्तेदारों में बांट दिया जाता है।

महोत्सव में उदयपुर से श्री लक्ष्मणसिंह कर्णावट पूर्व अध्यक्ष मेवाड़ कांफ्रेंस, श्री अर्जुनलाल खोखावत, श्री रमेशचन्द्र सिंघवी, श्री भंवरलाल पोरवाल, फतहनगर से श्री सवाईलाल पोखरना पूर्व अध्यक्ष मेवाड़ कांफ्रेंस, श्री कल्याणसिंह पोखरना की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। बंबोरा से श्री शांतिचन्द्रजी के ससुराल पक्ष से श्री रमेशचन्द्र जारोली संपूर्ण जारोली परिवार सहित, भींडर से श्री रमेशकुमार के ससुराल पक्ष से श्री भगवतीलाल, श्री अनिलकुमार, श्री दिलीपकुमार कोठारी एवं मदारिया / सूरत से श्री पंकजकुमार के ससुराल पक्ष से श्री अमृतलाल, श्री पारस कोठारी तथा कानोड़ के पारिवारिकजन, मित्रजन सम्मिलित हुए। आभार अभिव्यक्ति श्री कुंदनमल द्वारा की गई। आयोजन आदर्श व अनुकरणीय रहा।

-भेरूसिंह राव 'क्रांति'

प्रदेश के टेंट व्यवसायियों का लेकसिटी में 'झलक-2016'

-प्रदेश बैठक में प्रस्ताव पारित, बाल विवाह में नहीं करेंगे टेंट बुकिंग-

उदयपुर। प्रदेश के टेंट व्यवसायियों ने लेकसिटी में सितंबर-2016 में आयोजित होने वाले त्रिदिवसीय प्रांतीय महाअधिवेशन एवं रजत जयंती समारोह 'झलक-2016' को धूमधाम से मनाने के लिए मंथन और शुभारंभ मुख्यमंत्री के हाथों कराने का निर्णय लिया। बैठक में बाल विवाह में टेंट बुकिंग नहीं करने का सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया।

हिरणमगरी से. 11 स्थित मरूधर भवन में उदयपुर जिला टेंट व्यवसायी समिति के तत्वावधान में राजस्थान टेंट डीलर्स किराया व्यवसायी समिति की बैठक प्रदेशाध्यक्ष रवि जिंदल की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

बैठक में उदयपुर चैप्टर के अध्यक्ष सुधीर चावत ने बताया कि सितंबर 2016 में होने वाले प्रांतीय महाअधिवेशन एवं रजत जयंती समारोह झलक-2016 के आयोजन को सफलतापूर्वक आयोजित करने के लिए 32 कमेटियों का गठन मुख्य समिति के संयोजक अर्जुन खोखावत, अनिल वैध व दुर्गेश शर्मा के नेतृत्व में किया गया। झलक 2016 लेकसिटी में बीएन कॉलेज मैदान पर 22 से 24 सितंबर को आयोजित किया जाएगा। इसमें करीब 200 स्टॉलें लगाई जायेंगी। प्रदेश के अलावा आसपास के राज्यों से करीब 5000 से अधिक टेंट व्यवसायी इसमें भाग लेंगे। शहर के सभी प्रमुख चौराहों पर आकर्षक सजावट कर नन्हे-नन्हे बल्बों से रंगबिरंगी रोशनी की जायेगी। प्रत्येक जिले एवं तहसील स्तर पर व्यापक प्रचार-प्रसार कर अधिक से अधिक व्यवसासियों का रजिस्ट्रेशन किया जाएगा। झलक 2016 की स्मारिका भी प्रकाशित की जायेगी।

प्रदेशाध्यक्ष रवि जिंदल ने आह्वान किया कि प्रदेश, जिला एवं तहसील स्तर पर गठित संगठन के पदाधिकारी झलक 2016 में अपना पूर्ण सहयोग देकर इसे सफल बनाये और अपने-अपने क्षेत्र में रजिस्ट्रेशन प्रारंभ कर दें। जिंदल ने बताया कि बैठक में तहसील स्तर तक संगठन को मजबूत बनाने का निर्णय लिया गया। बैठक में बाल विवाह में टेंट नहीं लगाने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया। उन्होंने कहा कि अब बुकिंग आयु प्रमाणपत्र देखकर की जायेगी। यदि किसी ने फर्जी तरीके से बाल विवाह के लिए टेंट बुक कराया तो पुलिस को सूचित किया जाएगा।

प्रदेश महामंत्री रघुनंदन बंसल ने बताया कि झलक-2016 का उद्घाटन प्रदेश की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे से कराया जाना और समापन समारोह में पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत एवं कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष सचिन पायलट को आमंत्रित करना प्रस्तावित है।

उदयपुर चैप्टर के महा सचिव कमलेश पोखरना ने बताया कि प्रदेश स्तरीय बैठक में 28 जिलों के अध्यक्ष, महामंत्री एवं कोषाध्यक्ष के अलावा प्रदेश पदाधिकारी और उदयपुर टेंट व्यवसायियों ने भाग लिया। बैठक का संचालन महासचिव सुनील हिंगड़ ने किया।

बधाई

विश्वास भाणावत

सीबीएससी 12वीं बोर्ड के घोषित हुए परिणाम में उदयपुर के सेंटपॉल सीनियर सैकण्डरी स्कूल के छात्र विश्वास भाणावत ने साइंस-मैथ्स विषय में 93 प्रतिशत अंक प्राप्त कर स्कूल में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

विश्वास की माता डॉ. कल्पना भाणावत ने बताया कि प्रारंभ से ही विश्वास अपनी पढ़ाई के प्रति पूर्ण समर्थन लिये रहा। इस परीक्षा में उसने जी-तोड़ मेहनत कर दिन-रात एक कर दिया सो उसकी उम्मीद कारगर रही। विश्वास के पिता डॉ. शूरवीरसिंह भाणावत सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कॉमर्स कॉलेज में लेखा एवं सांख्यिकी विभाग के अध्यक्ष हैं।

ईशिता नागदा

सीबीएससी 12वीं बोर्ड के घोषित हुए परिणाम में उदयपुर के सीपीएस स्कूल की छात्रा ईशिता नागदा ने साइंस बायो विषय में 93.6 प्रतिशत अंक प्राप्त कर टॉप किया है।

ईशिता के पिता शैलेष नागदा ने बताया कि ईशिता भी अपनी माता की राह पर पूर्णरूप से समर्पित होकर अध्ययन कर रही है। प्रारंभ से ही वह पढ़ाई में अव्वल रहती आई है। ईशिता की माता डॉ. श्वेता नागदा राजकीय महाराणा भूपाल चिकित्सालय में एनेस्थिसिया विभाग में सेवारत हैं।

शब्दांक भानावत

सीबीएससी 10वीं बोर्ड के घोषित हुए परिणाम में उदयपुर के सेंटपॉल सीनियर सैकण्डरी स्कूल के छात्र शब्दांक भानावत ने ए ग्रेड लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

शब्दांक के पिता डॉ. तुक्तक भानावत मंजे हुए पत्रकार हैं और माता रंजना भानावत शब्द रंजन पाक्षिक की संपादिका है। यों शब्दांक का पूरा परिवार साहित्य संस्कृति तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में नामवरी लिए है।

स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में बदलाव

उदयपुर। विश्वविद्यालय वाणिज्य एवं प्रबंध अध्ययन महाविद्यालय आगामी सत्र से अपने स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में आमूल-चूल परिवर्तन करने जा रहा है। भारत सरकार ने हाल ही में गजट में अधिसूचना जारी कर देश में प्रचलित सभी डिग्रियों के नामकरण में समरूपता स्थापित करने का प्रयास किया। अत: अब प्रत्येक विश्वविद्यालय को गजट में उल्लेखित नामकरण का ही प्रयोग करना होगा। इसी संदर्भ में विश्वविद्यालय ने अपने स्वपोषित स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के नामों में परिवर्तन किया है।

यह जानकारी वाणिज्य भवन में आयोजित प्रेसवार्ता में वाणिज्य एवं प्रबंध अध्ययन महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. जी. सोरल, सह अधिष्ठाता प्रो. रेणु जेठाना, लेखा एवं सांख्यिकी विभागाध्यक्ष प्रो. शूरवीर एस. भाणावत तथा बैंकिंग एवं व्यावसायिक अर्थशास्त्र विभाग के प्रो. पी.के. सिंह ने दी।

प्रो. जी. सोरल ने बताया कि लेखांकन एवं सांख्यिकी विभाग का मास्टर ऑफ फाइनेंस एवं कंट्रोल पाठ्यक्रम का नामकरण अब एम.कॉम (फाइनेंस एवं कंट्रोल) होगा। बैंकिंग एवं व्यावसायिक अर्थशास्त्र विभाग के मास्टर ऑफ इंटरनेशनल बिजनैंस एवं मास्टर ऑफ बैंकिंग एवं इंश्योरेंस पाठ्यक्रमों के नामकरण क्रमश: एम.कॉम (इंटरनेशनल बिजनस) एवं एम.कॉम (बैंकिंग एवं इंश्योरेंस) होंगे। व्यावसायिक प्रशासन विभाग का पाठ्यक्रम मास्टर ऑफ ह्यूमन रिसोर्स मेनेजमेंट का नामकरण अब एम.कॉम (ह्यूमन रिसोर्स डवलपमेंट) होगा। अब संपूर्ण देश में वाणिज्य एवं प्रबंध के क्षेत्र में स्नातकोत्तर डिग्री एम.कॉम या एम.बी.ए. के नाम से ही मिलेगी। इन चारों पाठ्यक्रमों में एम.कॉम नाम जुड़ने से राष्ट्रीय स्तर पर इनकी पहचान बनेगी। डिग्री के नामकरण में एकरूपता होने से रोजगार के बेहतर अवसर सृजित होंगे। इससे आम व्यक्ति एवं कारपोरेट जगत में संशय की स्थिति उत्पन्न नहीं होगी। सरकारी विभागों में भी इन पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों के आवेदन करने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होगी और रोजगार प्राप्त करते समय विद्यार्थियों को अपने पाठ्यक्रम का परिचय नहीं देना होगा।

प्रो. रेणु जेठाना ने बताया कि आज पूरे देश में कौशल भारत की बहस छिड़ी हुई है इसी दिशा में लेखांकन एवं सांख्यिकी विभाग ने एक सार्थक प्रयास करते हुए लेखांकन के क्षेत्र में कौशल विकास आधारित पाठ्यक्रम तैयार किया है। लेखांकन के क्षेत्र में मध्यम एवं निचले स्तर पर कुशल लेखाकारों की अत्यंत कमी है किंतु वर्तमान में कोई भी पाठ्यक्रम इस कमी को दूर नहीं कर पा रहा है। अत: बाजार की आवश्यकता को देखते हुए लेखांकन एवं सांख्यिकी विभाग ने त्रिवर्षीय बैचलर ऑफ वोकेशन (एकाउटिंग, टेक्सेशन एवं आडिटिंग) पाठ्यक्रम तैयार किया है जो इसी सत्र से लागू होगा। यह पाठ्यक्रम यू.जी.सी. के मानदंडों के आधार पर तैयार किया गया है। इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने पर विद्यार्थियों को रोजगार मिलना तय है क्योंकि यह पाठ्यक्रम पूर्ण रूप से उद्योग जगत की आवश्यकता को ध्यान में रखकर बनाया गया है।

प्रो. शूरवीर एस. भाणावत ने बताया कि यह त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम 6 समेस्टर में विभाजित होगा और कुल 30 पेपर होंगे। 30 पेपर में से 12 पेपर सामान्य शिक्षा के तथा 18 पेपर कौशल विकास के होंगे जो पूर्ण रूप से कम्प्यूटर लेखांकन लेबोरेटी में सिखाये जायेंगे। इस पाठ्यक्रम में तीन निकास द्वार भी निश्चित किये गये है अर्थात विद्यार्थी पाठ्यक्रम को बीच में छोड़कर निकल सकता है। एक वर्ष की सफलतापूर्वक पढ़ाई करने के पश्चात पाठ्यक्रम छोड़ने पर उसे डिप्लोमा (लेखांकन), दो वर्ष की सफलतापूर्वक पढ़ाई करने के पश्चात पाठ्यक्रम छोड़ने पर विद्यार्थी को एडवांस डिप्लोमा (एकाउंटिंग एंड टेक्सेशन), तीन वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर बैचलर ऑफ वोकेशन (एकाउंटिंग टेक्सेशन एंड ऑडिटिंग) की डिग्री प्रदान की जायेगी। उन्होंने बताया कि कौशल विकास आधारित पेपर का अध्ययन कम्प्यूटर आधारित होगा तथा सेमेस्टर के अंत में परीक्षा भी कम्प्यूटर आधारित होगी। पाठ्यक्रम का माध्यम हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों होगा। कुल 180 क्रेडिट का पाठ्यक्रम होगा और एक क्रेडिट 60 मिनट के 15 कालांशों के बराबर होगा। यह पाठ्यक्रम स्वपोषित होगा और कुल 40 सीटें निर्धारित की गई हैं इसमें 10 पेमेंट सीट होगी। प्रवेश पूर्ण रूप से कक्षा 12 के अंकों के आधार पर दिया जाएगा।

प्रो. पी.के. सिंह ने बताया कि महाविद्यालय का चिरप्रतिक्षित बी.कॉम (ऑनर्स) पाठ्यक्रम भी अगले सत्र से प्रारंभ किया जा रहा है। दक्षिणी राजस्थान के अधिकतर मेधावी छात्र इस कोर्स को करने के लिए दिल्ली तथा अन्य बड़े शहरों की ओर रूख करते हैं। अब उनको यह सुविधा उदयपुर में भी उपलब्ध होगी।

इस कोर्स का पाठ्यक्रम यू.जी.सी. द्वारा जारी किये गये पाठ्यक्रम के समान है। यही पाठ्यक्रम कुछ संशोधन के साथ देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय जैसे दिल्ली विश्वविद्यालय के श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स में चल रहा है। इस तरह विद्यार्थी उदयपुर में रह राष्ट्रीय स्तर के पाठ्यक्रम पढ़कर अपने केरियर को श्रेष्ठ बना सकते हैं।

ग्लेनमार्क द्वारा डिजिहेलर का लोकार्पण

उदयपुर। एकीकृत दवा कंपनी, ग्लेनमार्क फार्मास्युटिकल्स लि. ने भारत के प्रथम डिजिटल डोज इनहेलर (डीडीआई), 'डिजिहेलर' के लोकार्पण किया। अत्याधुनिक तकनीक से युक्त इस डिजिटल इनहेलर में सटीक डिजिटल डोज काउंटर के साथ-साथ कम खुराक के लिए चेतावनी सूचक भी मौजूद है, जो अस्थमा और चिरकालिक प्रति रोधी फुफ्फुसीय रोग (सीओपीडी) के मरीजों को उनके चिकित्सा संबंधी नियमों के अनुपालन पर नज़र रखने में सक्षम बनाता है।

ग्लेनमार्क फार्मास्युटिकल्स के भारत एवं अफ्रीका के अध्यक्ष एवं प्रमुख सुरेश वासुदेवन ने कहा कि हमें विश्वास है कि डिजिटल क्रांति की उद्योग जगत में भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होगी। विशेष तौर पर, अस्थमा एवं सीओपीडी से संबंधित बीमारियों में, जिसमें मरीज द्वारा उपचार हेतु निर्धारित नियमों का पालन नहीं करना विश्वस्तर पर सदियों पुरानी चुनौती है, और यह हर आयु वर्ग के मरीजों में अस्थमा एवं सीओपीडी के अपर्याप्त नियंत्रण का एक प्रमुख कारण का भी है।

डिजिहेलर भारत का प्रथम डिजिटल डोज इनहेलर (डीडीआई) है, जिसका लक्ष्य सदियों पुरानी इस चुनौती से निपटना है, क्योंकि यह उपकरण मरीजों को उसके द्वारा लिये गए खुराकों की संख्या पर नजर रखने में सक्षम बनाएगा, साथ ही इसमें लगा इंडिकेटर कम खुराक की चेतावनी भी देता है, जो मरीजों के लिए फायदेमंद है। इसके अतिरिक्त यह मरीजों द्वारा उपचार हेतु निर्धारित नियमों के अनुपालन की जाँच में डॉक्टरों को सक्षम बनाएगा।

मास्टर ऑफ पब्लिक हैल्थ (एमपीएच) के लिए अंतर्राष्ट्रीय छात्रवृत्ति

उदयपुर। जॉन हॉपकिंस यूनिवर्सिटी, ब्लूमिंग बर्गस्कूल ऑफ पब्लिक हैल्थ (जेएचएसपीएच) ने आईआईएचएमआर यूनिवर्सिटी, जयपुर के सहयोग से मास्टर ऑफ पब्लिक हैल्थ (एमपीएच) डिग्री कार्यक्रम की पेशकश की है। मास्टर ऑफ पब्लिक हैल्थ दो वर्षीय पूर्णकालिक पाठ्यक्रम है। आवेदन इसके अक्टूबर, 2016 से आरंम्भ होनेवाले चतुर्थ बैच के लिए मांगे गए हैं।

आईआईएचएमआर यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष डॉ. एस. डी. गुप्ता ने बताया कि इस पाठ्यक्रम के लिए छात्रों से एक तिहाई शुल्क ले रहे हैं जो उसे अमेरिका में किसी अन्य एमपीएच कार्यक्रम के लिए चुकानी पड़ती है। जेएचएसपीएच आईआईएचएमआर एमपीएच कार्यक्रम का शुल्क 22000 अमेरिकी डॉलर है। जो छात्र इस कार्यक्रम में प्रवेश लेंगे उन्हें अमेरिका यात्रा और ठहरने के लिए अंतर्राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी ताकि वे दो सप्ताह के प्रॉब्लम सॉल्विंग इन पब्लिक हैल्थ जो कि जॉनहॉपकिंस ब्लूमिंगबर्ग स्कूल ऑफ पब्लिक हैल्थ बाल्टीमोर यूएसए की पहल है में भाग ले सकेंगे।

जो अभ्यर्थी इस कार्यक्रम के लिए आवेदन करना चाहते हैं उन्हें पूर्व छानबीन प्रक्रिया के माध्यम से आवेदन करना चाहिए और आवेदन से पूर्व आईआईएचएमआर से इस कार्यक्रम के लिए पूर्व स्वीकृति लेनी होगी।

अभ्यर्थी जो एमपीएच प्रोग्राम के लिए आवेदन करने के इच्छुक हैं उन्हें www.mph.iihmr.edu.in से पूर्व स्क्रीनिंग प्रश्नावली डाउनलोड कर उसे पूर्ण रूप से भर कर अपडेटेड सीवी के साथ पर 10 जून, 2016 तक प्रेषित करनी होगी। उपरोक्त दस्तावेज प्राप्त होने पर सभी छात्रों को एक पुष्टिकरण मेल भेजी जाएगी। जिन छात्रों ने आवेदन किया है उन्हें आवेदन का वर्तमान स्तर साझा किया जाएगा।

आईआईएचएमआर से ईमेल प्राप्त होने के पश्चात, चयनित छात्रों को जॉनहॉपकिंस यूनिवर्सिटी ब्लूमिंगबर्ग स्कूल ऑफ पब्लिक हैल्थ यूएसए से एक और ईमेल प्राप्त होगा जिस पर ऑनलाइन आवेदन करना होगा। एमपीएच कार्यक्रम के छात्र एसओपीएचएएस (स्कूल्स ऑफ पब्लिक हैल्थ एप्लकेशनसिस्टम) http://sophas.org/program-finder/ के माध्यम से लिए जाएंगे।

ह्रतिक रोशन करेंगे फ्लेयर पेंस को इण्डोर्स

उदयपुर। भारत के अग्रणी पेन निर्माता फ्लेयर ने बॉलीवुड सुपरस्टार ह्रतिक रोशन के साथ अपने एलाइंस की घोषणा की है। जैसे ही फ्लेयर राइटिंग इंस्ट्रुमेंटस लि. के ब्राण्ड एम्बेस्डर

ह्रतिक रोशन नए पेनों की सीरिज को लांच करेंगे, उसके साथ ही फ्लेयर का हाई विजिबिलिटी पब्लिसिटी कैम्पेन आरंभ हो जाएगा।

फ्लेयर के चेयरमेन के. जे. राठौड़ ने बताया कि फ्लेयर पेंस की संस्थापित क्षमता 5 मिलियन पेन प्रति दिन है तथा इसे भारत में 4000 वितरकों तथा 245,000 रिटेलर्स के मजबूत नेटवर्क के माध्यम से बेचा जाता है। बॉलीवुड के सुपरस्टार ह्रतिक रोशन बडे ब्राण्ड डिफरेंशिएटर होंगे तथा फ्लेयर पेंस को प्रोडक्ट अवेयरनेस बढ़ाने तथा नए ग्राहकों को जोड़ने में मदद करेंगे। फ्लेयर ने अनोखी खुबियों वाले कई नए पेन लांच करने का प्रस्ताव दिया है जो कस्टमर एक्सपीरियंस बढ़ाएंगे। पर्यावरण के प्रति सजगता उपाय अपनाते हुए फ्लेयर ने दो सबसे ज्यादा लिखने वाले पेन प्रस्तुत किए हैं। 10 रूपए मूल्य वाले फ्लेयर मैराथन से इसी मूल्य वाले किसी भी पेन से तीन गुना अधिक लिखा जा सकता है तथा 20 रूपए मूल्य वाले फ्लेयर राइटोमीटर ने बिना रूके 10,000 मीटर लिखने का विश्व कीर्तिमान बनाया है। इसके लिखने की क्षमता 10 से अधिक बाल पाइंट की क्षमता के बराबर है। 45 रूपए मूल्य वाला फ्लेयर इंकी भारत का सबसे ज्यादा लोकप्रिय फाउण्टैन पेन है। 20 रूपए वाले फ्लेयर एडिक्शन की पकड़ बहुत शानदार है जो लिखने के आनंद को बढ़ाता है। 5 रूपए मूल्य वाला फ्लेयर इजी क्लिक भारत का सबसे तेज बिकने वाला पेन है।

बालीवुड के सुपरस्टार ह्रतिक रोशन ने कहा पेन आपके जीवन में विकास जोड़ने लायक होता है और उन्हें याद आता है कि अपनी सफल सुपर नेचुरल एलियन एडवेंचर कृष (2006) में उन्होंने फ्लेयर पेन का उपयोग किया था जो फिल्म की कहानी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। ऐसी अपेक्षा की जाती है कि फ्लेयर के नए सेल पब्लिसिटी मटेरियल मे ह्रतिक रोशन को शामिल किए जाने से रिटेल आउटलेटस का लूक इम्प्रूव होगा तथा ग्राहकों के लिए फ्लेयर पेन की खरीदी एक संतुष्टिपूर्ण अनुभव बन जाएगा।

संस्कृति-संरक्षण के लिए तहसील स्तरीय संग्रहालय हों

संग्रहालय हमारी संस्कृति के सबसे प्रमुख रखवारे हैं अत: जगह-जगह ऐसे संग्रहालय स्थापित हों जहां सांस्कृतिक विरासत का उचित रूप से संग्रह, संरक्षण हो। भारत जनपदीय बहुल देश है इसलिए प्रत्येक जनपद बल्कि तहसील स्तर पर संग्रहालयों की स्थापना हो ताकि जनपदीय संस्कृति के बहाने संपूर्ण भारतीय संस्कृति का सर्वेक्षण, संरक्षण, अध्ययन, अन्वेषण तथा प्रकाशन हो सके। ये विचार संस्कृतिविज्ञ डॉ. महेंद्र भानावत ने व्यक्त किये।

वे अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस पर आयोजित संगोष्ठी में कल्चरल लैंडस्केप ऑफ राजस्थान विषय पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि अकेले मेवाड़ की ही पड़ कला, कावड़ कला, मोलेला मूर्ति कला, थेवा कला, छपाई कला तथा कठपुतली कला ने पूरे विश्व में ख्याति अर्जित करते हुए चौंकाने वाले कीर्तिमान हासिल किये।

संगोष्ठी में डेविड सी कूवे, डॉ. आफताब हुसैन, डॉ. दीपक सामंता तथा गोवर्धन सामर ने संग्रहालयों की भूमिका, ऐतिहासिक प्ररिप्रेक्ष्य, संग्रहालयों का रखरखाव, महत्व एवं उपयोगिता पर सारगर्भित चर्चा की। मानव विज्ञानी कार्यालय प्रधान डॉ. बी. के. मोहंती, डॉ. तिलक बागची, डॉ. निशांत सक्सेना तथा श्रुति सक्सेना की अगुवाई में महाराणा मेवाड़, सेंट पॉल, सेंट एंथोनी, संत तरेसा, सेंट ग्रेग्रोरियस तथा केंद्रीय विद्यालयों के छात्रों ने संग्रहालय देखा साथ ही विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार प्राप्त किये।

खबरदार ! मैं ताप हूं

-डॉ. सरिता जैन-

मैं ताप हूं। जी हां, आप अभी तो बहुत अच्छी तरह से जान गये हैं मुझे। सूर्य का तेज रूप हूं मैं। क्यों मचा रहे हो त्राहि-त्राहि ? सब कुछ तो तुम्हारा दिया ही तुम्हें लौटा रहा हूं। मैं तो सिर्फ 'तेरा तुझको अर्पण' का अर्थ समझा रहा हूं।

कभी कर खुद से सवाल। इन सबका जिम्मेदार है कौन ? अभी तो कुछ नहीं और निरंतर बढ़ेगा मेरा क्रोध। सूखा दूंगा सब नदी-नाले। झेलना होगा कठिन से कठिनतम समै। अब भी रूक। जरा थम। जरा सोच। जरा कर एक सवाल अपने मन से और खोज उनके जवाब- क्यूं काटे तेने जंगल? बसाये वहां कंकरिटों के महल ? क्या नहीं रह सकता तू सबके साथ हिलमिल एक ही छत के नीचे ? कितना करेगा तू दोहन इस धरती का ? क्यूं बहाया तेने व्यर्थ जल को ? शीतलता का एकमात्र विकल्प जो बचा उसको भी तेने यूं ही बहा दिया ?

क्यूं लगाये ऐसे उपकरण जो तुझे दे ठंडक और मुझे दे तपन ? कई वर्षों से झेल रहा हूं ये सब। अब बारी है मेरी तुझे सबक सिखाने की। धरती पर जीना कर दूंगा दुश्वार। एक ही अवसर बचा है प्रायश्चित के रूप में, ना संवार सिर्फ अपना जीवन। हरियाली कर संवार धरती का आंगन। तभी कम होगा मेरा प्रकोप। ना चलेगा काम कोरे कागजी सम्मेलनों से। कर प्रयास। जाग। खुद से संरक्षित कर और दे जा कुछ आने वाली पीढ़ी को।

2,000 रुपये महीने के कैश/बोनस वाउचर

उदयपुर। फ्यूचर समूह की प्रमुख हाइपरमार्केट रिटेल श्रृंखला बिग बाजार ग्राहकों के लिए महीने के पहले हफ्ते में बचत कराने वाला मंथली बचत बाजार मंथली कैश/बोनस वाउचर्स लेकर आया है। अब 1 से 8 जून के बीच 2,500 रुपये की खरीदारी करने वाले ग्राहकों को 2,000 रुपये के मंथली कैश/बोनस वाउचर मिलेंगे, जिनसे उन्हें पूरे महीने विभिन्न श्रेणियों के तमाम उत्पादों पर और भी फायदे प्राप्त होंगे।

बिग बाजार के मुख्य कार्य अधिकारी सदाशिव नायक ने कहा बिग बाजार में हर महीने 1 से 8 तारीख के बीच 2,500 रुपये की खरीदारी करने वाले ग्राहकों को 2,000 रुपये के वाउचर्स का अनूठा फायदा मिलेगा, जिन्हें वह 9 तारीख से महीने के अंत तक भुना सकते हैं। मंथली कैश/बोनस वाउचर्स की बुकलेट ग्राहकों को महीने के आठ दिनों में खरीदारी और बचत करने की ताकत ही नहीं देगी बल्कि बाकी दिनों में शानदार ऑफर्स के साथ अतिरिक्त बचत और छूट भी दिलाएगी।

ये कैश/बोनस वाउचर्स बिग बाजार के विक्रय मूल्य के ऊपर लागू होंगे और भारत में किसी भी बिग बाजार, एफबीबी तथा फूड बाजार में भुनाए जा सकेंगे। श्री नायक ने कहा कि हम कुछ नया करने और अपने वायदों को नए सिरे से परिभाषित करने की जरूरत समझते हैं।

तीन कविताएं

-डॉ. मालती शर्मा-

(1) बालकनी होते आंगन

पहले घरों में
आंगन हुआ करते थे
अब होती है बालकनी
बहु मंजिला बालकनी।
आंगन की सारी जरूरतें
बालकनी में सिमट आई हैं।
कपड़े, अनाज, बड़ी, पापड़,
आचार, शर्बत, मसाले,
तुलसी का विरवा,
फूलों के पौधे,
बच्चों का रमना, बूढ़ों का ठौर
सारे मौसम आंधी वर्षा ओले
और अनचाही वस्तुओं का
घर हो गया है बालकनी।
आंगन और बालकनी
आपस में बतियाते नहीं
इनके साथ हमारे ह्रदय भी
अब आंगन नहीं रहे।
वे बालकनी होते चले हैं।

(2) क्यों नहीं सुनाई पड़ा मुझे ?

ओ, मेरी भाषा
बोलियों के युग्म शब्दों!
आज से पहले मुझे
क्यों नहीं सुनाई पड़ा
वक्त की सनातनता में तुम में बसा
बजता सृष्टि का युग्म राग ?
क्यों नहीं गूंजी मेरे कानों में
तुम्हारी आकृति की, लिखावट की
एक-एक आड़ी-तिरछी खड़ी-पड़ी
रेखाओं, बिंदुओं में, मात्राओं में
'ऊँ' 'आ' की ध्वनियों में बसी
गूंजती झंकार..... ?
क्या इस देन के लिए मुझे
आज के कानफोड़ कोलाहल का
ऋणी होना चाहिए कि
जिससे बचने को मैंने
कमरे के खिड़की दरवाजे बंदकर
मन के कानों से
अनादिकाल के युग्मों के
दो-दो तारों में बजता
सृष्टि का युग्म राग सुना।
हमारी भाषा का कोई भी शब्द
जीवन चर्या में नहीं है अकेला
यह सुना कि
स्वार्थ के साथ जुड़ा है परमार्थ।

(3) स्मृतियों का सुखद अहसास

मैंने अपनी जिंदगी का
एक-एक दिन पल छिन
पूरी तरह से जिया है
यह जीने की यादें कबसे हैं
नहीं बता सकती, पर जिया है
उस क्षण के पूरे हर शहर गांव गली
मोहल्ले बस ट्रेन बम्बे की पगडंडी
दगरे पैरों में उलझती पतेल के
जीवंत परिवेश के साथ
मन की पाटी पर अंकित है
संपर्क में आये व्यक्ति अपने स्थान
कपड़ों उनके रंगों के साथ
किसी विशेष स्थिति में
उनके कहे वाक्य
जो जीवन संघर्ष में, कठिनाइयों के
घटाटोप अंधेरे में
राह दिखाते प्रकाश बनते रहे।
निराशा हताशा असफलताओं में
पीठ थपथपाते हाथ बनते रहे।
आलिंगन में बांधती बाहें बने रहे।
नहीं जानती यह सब
क्यों हुआ कैसे हुआ ?
पर कुछ मर्म बेधक वाक्यों की
छिदी कसक के साथ भी
आज ये सब स्मृतियां
इनका अहसास
सर्दियों में रजाई की गर्माहट सा
सुखद है।

बीएसएलआई सिक्योरप्लस प्लान की घोषणा

उदयपुर। आदित्य बिरला फाइनेंशियल सर्विसेज़ ग्रुप (एबीएफएसजी) की जीवन बीमा शाखा, बिरला सन लाइफ इंश्योरेंस (बीएसएलआई) ने एक ऐसी अप्रतिभागीय पारम्परिक बीमा योजना, बीएसएलआई सिक्योरप्लस प्लान की घोषणा की है, जो ग्राहकों को जीवन बीमा की सुरक्षा के साथ एक अधिपत्रित द्वितीय आय प्रदान करती है (भुगतान की अवधि के दौरान) जो कि भुगतान किए जानेवाले वार्षिक प्रीमियम से दोगुनी होती है।

बिरला सन लाइफ इंश्योरेंस के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी पंकज राज़दान ने कहा कि बीएसएलआई सिक्योरप्लस प्लान पॉलिसी की अवधि के दौरान पॉलिसीधारक के लिए जीवन बीमा की सुरक्षा प्रदान करता है। पॉलिसी की अवधि समाप्त होने पर, यह प्लान दो आयों के विकल्प देता है। विकल्प ए में ग्राहक 6 वर्षों में 1 गुणा से 6 गुणा तक बढ़ती हुई आय प्राप्त करेगा। उदाहरणस्वरूप, यदि किसी ग्राहक ने 1 लाख रुपये प्रतिवर्ष की दर से 12 वर्षों तक भुगतान किया है तो उसे 14 वें में 1 लाख रुपये मिलेंगे और उसके बाद 15वें, 16वें, 17वें, 18वें और 19 वें वर्ष में क्रमश: 2 लाख, 3 लाख, 4 लाख, 5 लाख, 6 लाख प्राप्त होंगे। विकल्प ब में, ग्राहक को 12 वर्षों तक भुगतान किए गए प्रीमियम का दोगुना प्राप्त होगा। उदाहारण के तौर पर किसी ग्राहक ने यदि 12 वर्षों तक 1 लाख प्रतिवर्ष का भुगतान किया है तो 14 वें वर्ष से उसे 12 वर्षों के लिए प्रतिवर्ष 2 लाख रुपये मिलेंगे। इन दोनों स्थितियों में प्राप्त होनेवाला लाभ पूर्णत: करमुक्त होता है। भुगतान की अवधि के दौरान असामयिक मृत्यु होने पर, निर्धारित आय लाभ भुगतान नामांकित व्यक्ति को प्रदान किये जाते हैं।

इस तरह से यह योजना ये सुनिश्चित करती है कि आपकी अनुपस्थिति में भी आपके परिवार की आर्थिक ज़रूरतें सुरक्षित रहती हैं। यह पॉलिसी, पॉलिसी अवधि के दौरान भुगतान किए गए प्रीमियम के 14.5 गुणा से लेकर 19 गुणा तक की बीमित राशि के साथ जीवन बीमा सुरक्षा भी प्रदान करती है। इस पॉलिसी में एक पूर्वनिहित आकस्मिक मृत्यु लाभ है जो सुनिश्चित करता है कि नामांकित व्यक्ति को बीमित राशि का दोगुना प्राप्त हो। यह योजना सभी महानगरों और वर्ग 1, वर्ग 2 एवं वर्ग 3 के शहरों में ग्राहकों के लिए उपलब्ध होगी।

वेला गांव में सामूहिक श्रमदान में उमड़ा ग्राम्य समुदाय

उदयपुर। मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान के अन्तर्गत सामूहिक श्रमदान कार्यक्रम कुराबड़ पंचायत समिति के वेला गांव में मालागुड़ा मजरे के सिबुड़ी की नाल एनिकट पर आयोजित हुआ जिसमें क्षेत्र के ग्रामीण स्त्री-पुरुषों ने श्रमदान कर गाद को निकाला।

श्रमदान कार्य की शुरूआत प्रधान श्रीमती अस्मा खान ने की। इस मौके पर विकास अधिकारी अजयकुमार आर्य, सहायक अभियन्ता नरेन्द्र सोनी, आशीष धाकड़, रतनलाल गमेती, बसन्ती देवी मीणा, पहाड़चन्द्र मीणा, खेमराज, ख्यालीलाल जैन, रानु खान, गजेन्द्र रावल, वालचन्द, शंकर चित्तौड़ विजय नहीं करेंगे, उधर पांव तक नहीं धरेंगे।

प्रताप ने इन गढ़ोलियों के स्वर में स्वर मिलाकर प्रतिज्ञा की- 'जब तक मुगल सेना पर विजय नहीं कर लूंगा तब तक अपने सिर से पगड़ी नहीं उतारूंगा। पांवों से जूतियां नहीं खोलूंगा और घोड़े से अलग नहीं रहूंगा।' इस प्रतिज्ञा से सैनिकों में बड़ा जोश उमड़ा तब मीणों ने भी अपनी भुजाओं की ताकत दिखाते हुए पंचकेशी रखने और घर नहीं बांधने का प्रण लिया।

इस युद्ध में तीर तलवार तोप बंदूक तेग तुमर भाला कटार खांडा गोफण जमिया आदि से बड़ा कमाल दिखाया गया। चेटक देव घोड़ा था। प्रताप और चेटक दोनों का जन्म एक ही दिन हुआ। प्रसिद्धि है कि यह घोड़ा लोकदेवता देवनारायण ने दिया था। महाराणा सांगा देवनारायण के परम भक्त थे। चित्तौड़ में कुंभा महल के पास देवनारायण की जो मंदरी बनी हुई है वह सांगा की ही बनाई हुई है। सांगा अपने गले में देवनारायण का नावा अथवा फूल धारण किये रहते थे। पुरूषों में सभी जीव के थन होते हैं पर घोड़ा इसका अपवाद कहा गया है। थन चेटक के नहीं थे तो प्रताप के भी नहीं थे इसीलिए चेटक और प्रताप दोनों अप्रतिम पौरूष के धनी थे।

उदयपुर की मोतीमगरी पर प्रताप रहे। अकबर फकीर वेश में उनके दीदार करने आया। राणा को उनके लोगों ने कहा- यह कोई फकीर नहीं, अकबर है। इसका सर कलम कर दो मगर वाह रे राणा! उस राजपूत का कलेजा देखो। उसने कहा- अपने दर आया आदमी अतिथि होता है। राणा ने बगो के हाथ से उस फकीर को रोटी दिलाई। राजपूत कहते रहे- बिलाव की तरह चोरी छुपे आया और रोटी ले गया। तभी से उसे बिलाव कहा जाने लग गया। बिलाव का खिताब तो राजपूतों ने दिया अकबर को। प्रताप ने अकबर को पहचान लिया था। यह पहचान उसकी आंख के नीचे मस्सा होने के कारण हुई। कई गुप्तचर भी होते थे जो एक दूसरे को भेद देते थे।

अकबर की सेना कोई गिन नहीं सकता था। एक-एक सेना नायक के साथ हजार के नीचे कोई सैनिक नहीं होते। यह सूबा कहलाता। ऐसे 122 सूबे और 3 हजार सेनापति थे। अकबर ने हल्दीघाटी के बाद कोई युद्ध नहीं किया।

चेटक और प्रताप का जन्म एक दिन हुआ। चेटक बड़ा रणनीतिबाज था। उसने कई लड़ाइयां लड़ीं। प्रताप को वह इतना प्रिय था कि उसकी मृत्यु के बाद प्रताप उसके गम में बीमार पड़ गये। उसका रंग काला व सफेद मिश्रित था। इसलिए उसे 'अबलक' कहते थे। दो रंगों वाले घोड़े आज भी अबलक कहलाते हैं। युद्ध में घोड़े से ही उसके मालिक की पहचान होती थी। यदि कोई योद्धा मर जाता तो उसका घोड़ा उसकी लोथ अथवा पाग लेकर उसके घर पहुंचता था। तब पगड़ी के साथ मृतक योद्धा की वीरांगना सती होती थी। ऐसी महिला 'पाग सती' कहलाती थी। घोड़ों पर या तो सईश बैठते या फिर रईश। सईश उगाड़ी पीठ पर बैठते जबकि रईश कांठी पर बैठा करते थे। चेटक देव घोड़ा था।

चेटक अपने स्वामी की हर हरकत और गंध को पहचानता था। उसने अपने जीवनकाल में किसी अन्य को अपने पर सवारी नहीं करने दी। चेटक ने जिस नाले को पार किया वह अत्यन्त चौड़ा था। पार कर जहां वह खोड़ा (लंगड़ा) हुआ वहां एक इमली का पेड़ था। कालान्तर में वह स्थान खोड़ी इमली के नाम से जाना गया। चेटक की मृत्यु का सदमा प्रताप को इतना गहरा लगा कि उसका सिर अपनी गोद में लिये प्रताप भी अचेत हो गये। पास खड़ा शक्तिसिंह चेटक की मृत्यु पर प्रताप को इतना असहाय देख स्तब्ध रह गया और वह भी अपने आँसू नहीं रोक सका। ऐसे प्राणों से भी अधिक प्रिय चेटक की स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए प्रताप ने वहीं सिद्धेश्वर मंदिर के पास छतरी बनवाई और महादेव शंकर के साथ-साथ उसकी पूजा के लिए श्रीधर व्यास को मुकर्रर किया।

इस संबंधी एक दन्ताल पत्र श्रीमाली जाति के व्यास गोत्रीय जमनालाल से मुझे हल्दीघाटी स्थित चेटक की समाधि पर सुनने को मिला जो इस प्रकार था-

गाम बलीचे के निकट,
चेटक ग्यो सुर धाम।
वही गाम वर विप्र को,
पातल कीन प्रदान॥

जमनालाल (85) ने बताया कि इसके लिए श्रीधर व्यास को पास का बलीचा गांव दान में दिया। वर्तमान में मोहनलाल श्रीमाली ने चेटक स्मारक के पास ही महाराणा प्रताप म्युजियम प्रारंभ कर रखा है जो प्रताप के जीवन को गौरवमय बनाये हुए है। मोहनजी के अनुसार श्रीधर नागदन्तजी के पुत्र थे। यह वंशावली इस प्रकार है- नागदन्त-श्रीधर-नीलकंठ-वसनो-वासुदेव-लहेआ-सवदास-हरिदास-बोटलो-केसवदास-नाथे-सवजी-मंशाराम-रदराम-सरजी-नंदलाल-मगनलाल(गोद आया)-जमनालाल-मोहनलाल-भूपेन्द्र कुमार।

हल्दीघाटी युद्ध.....

-पृष्ठ एक का शेष

हल्दीघाटी का युद्ध प्रताप का अंतिम युद्ध था जो अनिर्णित ही रहा। प्रताप की ओर से इस युद्ध में मेण कुल के मीणों की संख्या सर्वाधिक थी। युद्ध के दिन हल्की सी बरसात हुई थी जिसके फलस्वरूप वहां जो छोटी सी तलाई थी वह रक्तवर्णी होगई इसीलिए उसे 'रक्त तलाई' कहना शुरू कर दिया।

इस युद्ध में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका मानसिंह की रही। उदयपुर के पठारी जंगल में जब युद्ध का पैगाम लेकर मानसिंह पहुंचे तब प्रताप से उनकी मुलाकात हुई। प्रताप के मन में इस बात का खार था कि राजपूत होकर भी मानसिंह अकबर की गोद में जाकर बैठ गये अत: उनसे जै रामजी तो की परन्तु हाथ मिलाने को अपना हाथ आगे नहीं किया बावजूद इसके मानसिंह ने प्रताप को जोश ही दिलाया और कहा- 'तलवारों से तलवारें भिड़ाकर अकबर को दिखादो कि रजपूती जवानी कैसी होती है।

मानसिंह जानते थे कि योद्धा के दिल से भी मजबूत घोड़े के हड्डे होते हैं। जो इन हड्डों को पतंग की तरह उड़ा सकता है उसके लिए दुश्मन पर वार करना रुई के ढेर पर तलवार चलाना है। प्रताप को मानसिंह ने आंख का इशारा दिया कि भाग जाओ। पीछे से सेना आरही है। इशारा पाकर प्रताप और मानसिंह दोनों की आंखें भर आईं। सच ही है जब कुल उजड़ रहा होता है तब बोध देना पाप नहीं होता। शेर यदि घायल हो तो वीर उसका शिकार करने के बजाय उसकी रक्षा करना ही अपना कर्त्तव्य समझते हैं।

इशारा पाते ही प्रताप अपना मुकुट बड़ीसादड़ी के झाला मान को दे युद्धभूमि से कूच कर गये। मानसिंह ने शक्तिसिंह को संकेत दिया-'मैं तो मजबूर हूं पर तुम तो स्वतंत्र हो। जाओ, अपने भाई की रक्षा कर कर्त्तव्य की पालना करो।' यह सुन शक्तिसिंह की आंखें नम हो गईं। वह भी तुरन्त वहां से चल निकला। इस समय सत्रह तुरकों ने प्रताप का पीछा किया जिन्हें एक-एक कर प्रताप और शक्तिसिंह ने धूल चटा दी।

हल्दीघाटी का युद्ध प्रताप का प्रण-युद्ध था। अपने पिता उदयसिंह की पराजय के बारे में प्रताप ने सुन रखा था अत: भीतर से उन्हें मुगलों के प्रति जबर्दस्त डाह थी और इसका बदला लेना चाहते थे। फिर उन्हें यह भी ज्ञात था कि युद्ध में कंधा से कंधा भिड़ाकर साथ देनेवाले गढ़रक्षक गढ़ोलियों (गाड़ोलिया लुहार) ने प्रण कर रखा है कि जब तक

सेस्मे वर्कशॉप और मेटलाइफ फाउंडेशन द्वारा 'सपना, बचत, उड़ान' का लोकार्पण

डूंगरपुर। सेस्मे वर्कशॉप इन इंडिया, वह संस्था जो गली गली सिम सिम (सेस्मे स्ट्रीट के भारतीय रूपांतरण) के पीछे मौजूद है, और मेटलाइफ फाउंडेशन ने राजस्थान में सपना, बचत, उड़ान : आर्थिक बल, हर परिवार का हक नामक एक नई मल्टी-मीडिया पहलकदमी का लोकार्पण किया है। यह वैश्विक परियोजना ड्रीम, सेव, डू : फाइनेंशियल एम्पावरमेंट फॉर फैमिलीज का भारतीय रूपांतरण है। यह परियोजना लाभकारी वित्तीय कौशल और आचरण हासिल करने में मदद करने की मंशा के साथ युवा बच्चों पर फोकस करती है। यह परियोजना गली गली सिम सिम के मपेट्स, विचार-विमर्श के लिए भाषा और खर्च, बचत, साझेदारी एवं दान करने की कारगर नीतियों को दिखाते हुए आकर्षक कन्टेंट उपलब्ध कराएगी।

मैनेजिंग डायरेक्टर एंड सीईओ पीएनबी मेटलाइफ तरुण चुघ ने कहा कि मेटलाइफ फाउंडेशन की सहायता से, इस समय राजस्थान के डूंगरपुर जिले में कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। यह पहलकदमी अपने कार्यान्वयन साझेदार-जन शिक्षा एवं विकास संगठन के साथ साझेदारी में आयोजित की गई विभिन्न कार्यशालाओं एवं कार्यकलापों के माध्यम से 27,000 से अधिक महिलाओं और बच्चों तक पहुँचेगी। भारत में, 'सपना, बचत, उड़ान' राजस्थान, दिल्ली और झारखंड में सामुदायिक को शामिल करने के माध्यम से लगभग 17 लाख लोगों और राष्ट्रीय टेलीविज़न के माध्यम से 180 लाख से अधिक बच्चों तक पहुंचेगी। इस पहलकदमी के लिए, हिंदी भाषा में ऑडियो-विजुअल, प्रिंट और डिजिटल रिसोर्सिस का एक मुख्य सेट तैयार किया गया है।

तरुण चुघ ने कहा कि मेटलाइफ फाउंडेशन और सेस्मे वर्कशॉप, दोनों का उन समुदायों की सहायता करने का लंबा इतिहास है जिनमें हम काम करते हैं। हमारा लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि परिवारों को उस ज्ञान तक पहुंच हो जो उन्हें वित्तीय सुरक्षा के पथ पर अग्रसर करेगा। भारत में, हमारा अपेक्षाकृत व्यापक कारपोरेट सामाजिक दायित्व अल्प सुविधा प्राप्त बच्चों की शिक्षा पर फोकस कर रहा है। अपनी विभिन्न सीएसआर पहलकदमियों के माध्यम से, जिनमें सपना, बचत, उड़ान शामिल हैं, हम उन समुदायों में, जिनमें हम काम करते हैं, अल्प सुविधा प्राप्त बच्चों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव का सृजन करने की आशा कर रहे हैं।

डूंगरपुर में आयोजित कार्यशालाओं का लक्ष्य वित्तीय सशक्तीकरण के संबंध में ज्ञान, भाषा और नीतियों में सुधार लाना, खर्च, बचत, साझेदारी के बारे में सुविज्ञ विकल्प चुनने के लिए माता-पिताओं और बच्चों के बीच वार्तालाप को बढ़ाना तथा उनके वित्तीय और गैर-वित्तीय लक्ष्यों को साकार करने में उनकी मदद करता है। आनंदप्रद और मनोरंजनप्रद कार्यकलाप होने के कारण, बच्चों और बालिगों तक इन

कार्यशालाओं का पूरा आनंद लिया। ये कार्यकलाप माता-पिताओं को वित्तीय सशक्तीकरण के बारे में उनके बच्चों के साथ बातचीत करने के लिए एक शब्दकोश मुहैया कराते हैं। इन कार्यशालाओं के दौरान, बच्चे और उनके देखभालकर्ताओं ने गली गली सिम सिम के एपीसोडों, कहानियों और गानों को देखा तथा गेम्स खेले जिसने बचत, योजना बनाना, जरूरतें बनाम चाहतें, विलंबित परितोषण, आदि जैसे विषयों को समझने में उनकी मदद की।

इस अवसर पर साशवति बैनर्जी, मैनेजिंग डायरेक्टर, सेस्मे वर्कशॉप इन इंडिया ने कहा कि होशियार होने का अर्थ अक्षरों एवं अंकों से कहीं अधिक जानकारी का होना है। इसका अर्थ यह जानना है कि किस तरह समस्याओं को हल किया जाए और रचनात्मक तरीके से सोच विचार किया जाए। सपना, बचत, उड़ान पहलकदमी के माध्यम से, हमारा परिवारों को वित्तीय समावेशन से संबंधित नीतियों एवं कौशलों तक पहुँच सुलभ कराने का लक्ष्य है। हमारी नीति उनके रोजाना की कामकाज एवं आदतों में वित्तीय सशक्तीकरण से जुड़े कार्यकलापों को शामिल करवाना, बच्चों और बालिगों के बीच खुला संवाद एवं मेलजोल को साध्य बनाना है। विभिन्न कार्यकलापों के माध्यम से, हम वह जानकारी उपलब्ध कराएंगे जो परिवारों और बच्चों को भविष्य एवं संभावित असफलताओं के लिए बेहतर ढंग से तैयार होने में मदद करेगी।

सावधानीपूर्वक विकल्प चुनने, योजना बनाने और बचत करने की योग्यता अच्छे स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन के समग्र परिणामों के लिए अनिवार्य है। जैसा कि अनेक अन्य महत्वपूर्ण जीवन कौशलों के संबंध में लागू है, उसी तरह शुरुआती सालों में इन योग्यताओं की बुनियाद स्थापित करना सकारात्मक जीवनकालिक आदतों का निर्माण करने के लिए अनिवार्य है। अधिकांश लोग और परिवार आर्थिक अनिश्चितताओं एवं चुनौतियों का सामना करते हैं। उनमें से, पूरी दुनिया में लगभग 2 अरब लोग कम आय तथा दिन-प्रतिदिन के खर्चों का प्रबंधन करने, अप्रत्याशित का प्रत्युत्तर देने और भविष्य के लिए बचत करने में मदद करने हेतु किफायती, सुरक्षित वित्तीय सेवाओं एवं उत्पादों तक पहुंच पाने की क्षमता की कमी के कारण विशेष रूप से सुग्राही हैं।

कान्यो मान्यो

आंख दिखाने की भळावण

सेठजी मृत्यु शैय्या पर पड़े हैं। अब बोलना चलना कम हो गया है। पता नहीं, सोये-सोये आंखें आकाश की ओर किये किस चिंता में खोये रहते हैं। कान्यो बोला, मान्यो तुम्हारा भी उनसे परिचय रहा है। कई बार मिले भी हो। उनके विश्वासपात्रों में भी रहे हो। अब पता नहीं, कितने दिन के मेहमान हैं, चाहो तो मेरे साथ मिललो। मान्यो ने फट हां कर दी, कहा, कान्यो तुम्हारी बात कभी टाली नहीं और ऐसे लोगों से तो तुरतफुरत मिल लेने का पुण्य कमा लेना चाहिये।

दोनों तैयार हो सेठजी से मिलने पहुंचे। मान्यो को लगा, सेठजी के मन में कोई गहरी टीस है जिसके कारण उनके प्राण अटके हुए हैं। वह सेठजी से बोला, आपके मन में कोई बात अटकी हुई हो तो कहें, बनती कोशिश हम आपकी सहायता के लिए तैयार हैं। यह सुनते ही सेठजी की आंखें मिठासमय लगीं। आकाश से हटकर मान्यो पर मुस्कान के साथ तड़की जैसे उड़द की फली गर्मी पाकर तड़क देती है। मान्यो का हाथ अपनी मुट्ठी में दबाये बोले, बाकी तो सब ठीक है, एक ठसका है। मान्यो कान नीचे कर बोला, दिल खोलकर कहें, वह ठसका क्या है? यही कि कुंवर थोड़ा गेला है और घर नौकर-चाकरों से अटा है। मेरे बाद ऐसा न हो कि काम ठप्प हो जाय और नामवरी मिट्टी में मिल जाय।

मान्यो ने पूरा ढाढ़स बंधाया। ललाट पर हाथ रख कहा, हमारा साथ कुंवर को बराबर मिलता रहेगा। आप निश्चिंत हो जाइये और भगवद शरण में अपना चित्त लगायें। कुंवर को बुलाता हूं, घरवाली को भी। उनके सामने जो भळावण देना चाहें, सारा काम उसी माफक होगा।

सेठजी ने तसल्ली का घूंट पिया। पानी का घूंट भी गंगाजल की दो बूंदों के साथ मुंह में टपकाया। घरवाली को हिये की आंखों से देख भरोसा दिलाया। कुंवरजी को सीख देते कहा, बेटाजी, अब मेरा समय निकट है। मेरे बाद तू ही घर का मालक है। सब कुछ तेरे भरोसे है। मां की सेवा करना और नौकरों पर नजर रखना। कभी-कभी उन्हें अपनी आंख दिखाते रहना। मान्यो और कान्यो सदा तेरा साथ देंगे। यह कहते ही सेठजी ने जोर की हिचकी ली और देखते-देखते आंखें फेर दी।

बारह दिन जैसे-तैसे निकल गये। सारे दस्तूर राजी-खुशी सम्पन्न हो गये। दो दिन बीते कि कुंवर को सेठजी का कथन याद आया- नौकरों पर नजर रखना। कभी-कभी उन्हें अपनी आंख दिखाते रहना। सो उसने सारे नौकरों को बुलाया और अपनी अंगुलियों से आंखों की परत हटाते मुंहफाड़ कर दायें-बायें घुमन्तू पंखे की तरह कर्व बनाकर कहा, देखो म्हारी आंख्यां-सेठजी री या ही आखिरी भळावण ही। अणी पछै ही वणारो जीव ठिकाणे लागो।

सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

उदयपुर। वण्डर सीमेण्ट लि. द्वारा संचालित सीएसआर गतिविधियों के अन्तर्गत ग्राम पंचायत, फलवा के ग्राम-धनोरा में छह मासिक नि:शुल्क सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन सहायक कृषि अधिकारी निम्बाहेड़ा श्रीमती नीलु मरमट एवं ग्राम पंचायत-फलवा सरपंच शंभूलाल जाट के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

वण्डर सीमेण्ट लि. के उप प्रबन्धक (सी.एस.आर.) हेमेन्द्रसिंह झाला ने बताया कि सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र पर ग्राम धनोरा की 22 महिलाओं-बालिकाओं के बैच को सुश्री रानु सरगरा द्वारा छह माह तक रोजगारोन्मुखी नि:शुल्क प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों ने समर कोट, लहंगा-दुपट्टा, सलवार सूट, बैंगल बॉक्स, बैग, टिफिन कवर, बैबी किट इत्यादि के साथ-साथ दैनिक उपयोग में आने वाली पौशाखों की सिलाई करना सिखा। यह प्रशिक्षण केन्द्र ऊषा सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र, गुडगांव से मान्यता प्राप्त है, जिसके तहत सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया। मुख्य अतिथि श्रीमती नीलु मरमट ने महिलाओं को समूह बनाकर सिलाई के कार्य को रोजगारोन्मुखी बनाने की सलाह दी। इस मौके पर महिलाओं द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का ग्रामवासियों द्वारा अवलोकन किया गया।

उदयपुर को एक और ऐतिहासिक सौगात

रेलवे स्टेशन के द्वितीय प्रवेश द्वार व यात्री सुविधाओं का लोकार्पण

उदयपुर। रेल राजयमंत्री मनोज सिन्हा ने कहा कि रेल प्रशासन यात्री सुविधाओं को बढ़ाने के लिए सदैव तत्पर रहा है। सभी के सहयोग से अल्प अवधि में ही यह सपना साकार हुआ है। यह बात रेलराज्य मंत्री ने उदयपुर सिटी रेलवे स्टेशन के द्वितीय प्रवेश द्वार, नये बुकिंग हाल, वेटिंग हाल तथा अन्य यात्री सुविधाओं के लोकार्पण अवसर पर कही।

उन्होंने कहा कि गत दो वर्षो में उदयपुर क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कार्य जैसे प्लेटफार्म शेल्टर का विस्तार, वेटिंग हॉल में सेन्ट्रलाइजड एयर कूलिंग, सोलर पॉवर प्लान्ट,, हाई मास्ट टावर, मल्टी लाईन डिस्प्ले बोर्ड, कोच इण्डीकेशन बोर्ड, आर.ओ. प्लान्ट, 20 कोच की पिट लाईन का निर्माण, एक अतिरिक्त स्टेबलिंग लाईन का निर्माण, राणा प्रतापनगर में प्लेटफार्म संख्या दो की ऊंचाई बढ़ाना एवं फुट ओवर ब्रिज का निर्माण पूरा हो चुका है। इसके साथ ही कपासन एवं फतेहनगर स्टेशनों पर हाई लेवल प्लेटफार्म का निर्माण, प्लेटफार्म का विस्तार एवं प्लेटफार्म शेल्टर की शीट बदलने का कार्य पूरा हो चुका है।

रेल राजयमंत्री ने कहा कि मैं यह विश्वास दिलाता हूं कि विकास की गंगा लगातार जारी रहेगी और कई सौगातें अगले 1-2 वर्षों में उदयपुर क्षेत्र के रेल यात्रियों को मिलेंगी। वर्तमान में भी 26 करोड़ के कार्य उदयपुर एरिया में किये जा रहे है।

उन्होंने अजमेर से उदयपुर के बीच शीघ्र विद्युतीकरण के बारे में भी जानकारी प्रदान की और बताया कि

इसके लिये 314.28 करोड़ की लागत का कार्य स्वीकृत हो चुका है जिसके दिसम्बर 2018 में पूर्ण होने का लक्ष्य है। उदयपुर-हिम्मतनगर खण्ड में 830 करोड़ की लागत का आमान परिवर्तन का कार्य भी प्रगति पर है।

समारोह में गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि सेकण्ड एंट्री बनने से उप नगरीय क्षेत्र का यातायात दबाव कम होगा तथा अनुमानित 5 करोड़ रुपए के पेट्रोल-डीजल की सालाना बचत होगी। लोगों का अमूल्य समय भी बचेगा व ट्रैफिक जाम से भी मुक्ति मिलेगी। मंडल रेल प्रबंधक अजमेर पुनीत चावला ने बताया कि करीब तीन करोड़ रुपए की लागत से निर्मित प्रवेश द्वार के लिए एक करोड़ रुपए नगर निगम, एक करोड़ यूआईटी, 20 लाख गुलाबचंद कटारिया के विधायक मद से, 20 लाख रुपए सांसद अर्जुनलाल मीणा के मद से, 20 लाख रुपए विधायक फूलचंद मीणा के मद से प्रदान किया गया है।

समारोह में उदयपुर सांसद अर्जुनलाल मीणा, चित्तौड़गढ़ सांसद सी.पी. जोशी, राजसमंद सांसद हरिओम सिंह राठौड़, उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, नगर निगम महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, उत्तर पश्चिम रेलवे महाप्रबंधक अनिल सिंघल सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

प्रवेश द्वार के बारे में :

शहर के समृद्ध हेरिटेज को ध्यान में रखते हुए 25 गुना 12 मीटर का शानदार प्रवेश द्वार बनाया गया है। इसके दोनों ओर पैदल चलने के लिए 8.5 मीटर का रास्ता बनाया गया है। चार पहिया वाहनों के लिए 3225 वर्गमीटर एवं दो पहिया वाहनों के लिए 3 हजार वर्ग मीटर पार्किंग एरिया बनाया है। यहां पर चार पीआरएस सुविधा युक्त काउंटर हैं। जल्दी ही यहां पर एटीएम व एटीवीएम की सुविधा भी होगी।

नया चैनल 'स्टार उत्सव मूवीज़'

उदयपुर। भारत का सबसे बड़ा प्रसारक स्टार इंडिया अपने बहुप्रतीक्षित फ्री टु एयर (एफटी.ए.) हिन्दी फिल्मों के चैनल 'स्टार उत्सव मूवीज़' की शुरुआत कर रहा है जो ग्रामीण बाजार के लिए एक अनूठी पेशकश होगी।

स्टार गोल्ड, मूवीज़ ओके, स्टार गोल्ड एचडी और स्टार उत्सव मूवीज़ के महाप्रबंधक हेमल झवेरी ने कहा कि भारत के पहले 'संपूर्ण ग्रामीण' हिन्दी मूवी चैनल स्टार उत्सव मूवीज़ की शुरुआत की घोषणा करते हुए हम बेहद उत्साहित हैं। नए चैनल को लेकर जागरुकता फैलाने और दर्शकों तक पहुँचने के लिए एक मल्टीमीडिया अभियान पहले ही शुरू हो चुका है। जल्दी जागरूकता फैलाने के लिए स्टार इंडिया के समृद्ध नेटवर्क का फ़ायदा उठाएंगे। टीवी पर ज़बरदस्त प्रमोशन के साथ रेडियो पर विस्तृत प्रचार किया जाएगा। झवेरी ने कहा कि ग्रामीण बाजार इस समय सबसे महत्वपूर्ण मोर्चा है और हमारा मानना है कि स्टार उत्सव मूवीज़ के साथ हम दर्शकों और विज्ञापनदाताओं को सशक्त बनाएँगे।

शब्द रंजन के सहयोगार्थ

वार्षिक व्यक्तिगत	250/
वाषिक संस्थागत	300/
संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
साहित्यिक चौपाल	500/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
आजीवन सदस्य	3000/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।